छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : ज्येष्ठ कृष्ण/शुक्ल पक्ष, संवत् 2075
मई 2018

ओ३म्

अंक 152, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

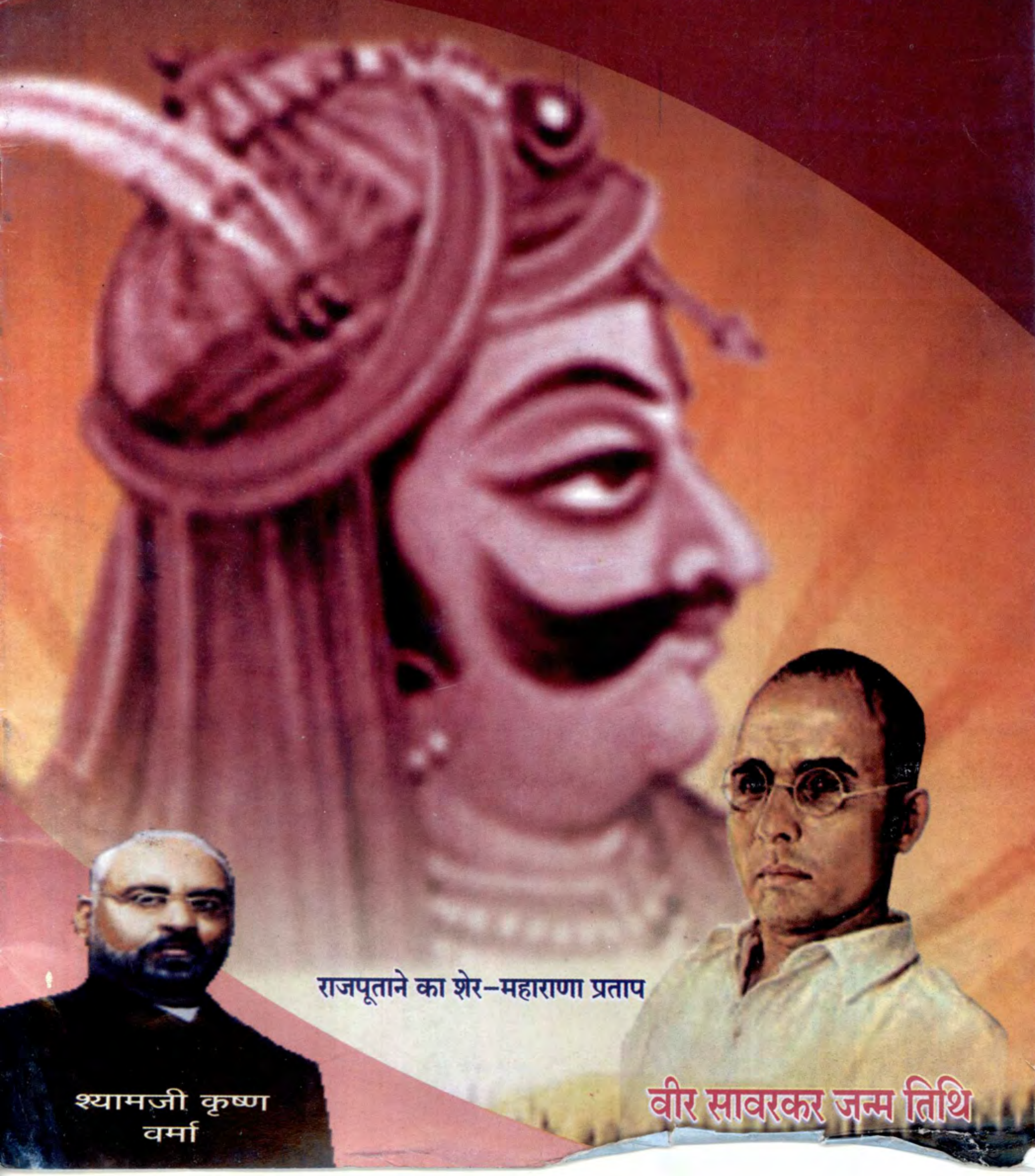

प्रवेश प्रारम्भ

॥ ओ३म् ॥
॥ सा विद्या या विमुक्तये ॥

प्रवेश प्रारम्भ

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

तुलाराम आर्य कन्या गुरुकुल आश्रम गोहड़ीडिपा

गोहड़ीडिपा, व्हाया-राजपुर, तह. लैलूंगा,
जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

शिक्षा-सत्र : 2018-19 में

प्रवेश प्रारम्भ

कक्षा 6वीं से 8वीं

बन्धुओं !

वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए नारी शिक्षा को बढ़ावा देते हुए बेटी पढ़ेगी, भविष्य गढ़ेगी। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ को चरितार्थ करते हुए छत्तीसगढ़ में एक मात्र कन्या गुरुकुल आश्रम।

हमारा संकल्प :-

1. शिक्षा के साथ संस्कार।
2. बौद्धिक विकास के साथ नैतिक विकास।
3. पूर्णतया निःशुल्क शिक्षा।
4. आवास, भोजन, छादन, वस्त्र (ड्रेस) साबुन तेलादि की निःशुल्क व्यवस्था।
5. वैदिक संस्कार यथा प्रतिदिन संध्या हवन करना।
6. कन्याओं के स्तरानुसार दक्षता को लक्ष्य बनाकर अध्यापन की योजना।
7. बालिकाओं का शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक विकास को ध्यान में रखते हुए योग, आसन, व्यायाम, प्राणायाम, आत्मरक्षार्थ, जूडो-कराटे सिखाने की व्यवस्था।
8. आश्रम में खेल को भी प्रोत्साहन दिया जाता है व खेलने हेतु सामान, खेल मैदान उपलब्ध।
9. बालिकाओं को आत्म निर्भर बनाने का प्रयास करना एवंसुरक्षा व्यवस्था।
10. सभी बालिकाओं को समान भोजन, छादन, रहन-सहन की उचित व्यवस्था।

सभी अभिभावकों से निवेदन है कि अपने होनहार बालिकाओं को प्रवेश देकर पुण्य के भागी बनें।

संपर्क : 9981671267, 9009639510, 7509726864

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७५
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२०
दयानन्दाब्द - १९५

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १३, अंक १० — ओ३म् — मास/सन् - मई २०१८

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	कर्म क्षेत्र में विजयी हों	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	राष्ट्रोत्थान में शिक्षा तन्त्र की भूमिका	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	दिव्य मातृत्व से ही दिव्य संतान निर्माण संभव	डॉ. अर्चना प्रिय आर्य	०८
४.	इच्छित वस्तु कैसे प्राप्त हो	महात्मा चैतन्य मुनि	११
५.	प्रभु प्राप्ति के लिए विद्वान् व संयमी से ज्ञान आवश्यक	डॉ. अशोक आर्य	१३
६.	वेद एवं वैदिक साहित्य के स्वाध्याय का महत्व	मनमोहन कुमार आर्य	१४
७.	"भूख"	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	१६
८.	"खरी कमाई"	सम्पादक	२०
९.	दलित मसीहा के रुप में वीर सावरकर	अजीत आर्य	२२
१०.	स्वाभिमानी शेर- महाराणा प्रताप	आचार्य मुकेश आर्य	२४
११.	विश्व तम्बाकू निषेध दिवस	ऋषि कुमार आर्य	२६
१२.	बेटी का जीवन बचाएँ	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	२८
१२.	होमियोपैथी से गठिया व जोड़ों का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१३.	समाचार प्रवाह		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

कर्म क्षेत्र में विजयी हों

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

जयेम कारे पुरुहूत कारिणो, अभितिष्ठेम दूढ्यः।
नृभिर्वृ त्रं हन्याम शूशुयाम च, अवेरिन्द्र प्रणो धियः ॥ ऋग्. ८.२१.१२

ऋषिः **सौभरि काण्वः**।। देवता इन्द्रः। छन्दः **पंक्तिः**।

● (पुरुहूत इन्द्र) हे बहुस्तुत परमेश्वर ! **(कारिणः)**कर्म-परायण (हम) **(कारे)** कर्म क्षेत्र में **(जयेम)** विजयी हो **(दुदयः)** दुर्बुद्धियों और दुष्कर्माओं को, **(अभितिष्ठेम)** पराजित करें, **(नृभिः)**पौरुषवानों और पौरुषो के द्वारा **(वृत्रं)** वृत्र को **(हन्याम)** नष्ट करें, **(च)** और **(शूशुयाम)** बढ़े। **(धियः)** ज्ञानों तथा कर्मों को, **(प्र अवेः)** प्रकृष्ट रुप से रक्षित कर।

हे बहुतों से पुकारे जाने वाले परमात्मन् ! हम भी तुम्हें पुकारते हैं। पर हम तुमसे यह प्रार्थना नहीं करते कि हमारे करने के जो कार्य उन्हें तुम आकर कर जाओ। हम तो तुम्हें पुकारते हैं शक्ति और प्रेरणा पाने के लिए, जिससे हम स्वयं कर्मण्य बनकर कर्मक्षेत्र में उतरें। हे अनन्त बली ! शूरों के शूर ! तुम हमें ऐसी प्रेरणा करो कि हम कर्म से घबराये नहीं, किन्तु कर्मवीर बनकर कर्मक्षेत्र में विजयी हों, अपने निर्धारित लक्ष्य में सफल हों ! जो दुष्प्रज्ञ और दुष्कर्मा लोग हमारे मार्ग में आयें उन्हें हम पराजित कर दें, क्योंकि ये लोग सज्जनता के शत्रु हैं। साथ ही, हमारे अन्दर भी यदि दुर्बुद्धि और दुष्कर्म की वृत्तियां उत्पन्न होती है, तो उनका भी हम संहार करें। विभिन्न क्षेत्रों में वृत्र ने अपना साम्राज्य जमाया हुआ है। अन्तःकरण में वह पाप और तामसी वृत्तियों के रुप में पनपता है। समाज में वह अविद्या, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, पशुता आदि के रुप में सिर उठाता है। उस वृत्र को हम नष्ट करें, क्योंकि उसे नष्ट किये बिना हमारी वैयक्तिक और सामाजिक वृद्धि एवं उन्नति नहीं हो सकती।

हे रक्षक ! हे प्रज्ञानधन ! हे सत्कर्मकुशल ! तुम हमारी धी पर अपना नियन्त्रण स्थापित करो, धी शब्द से सूचित होने वाले हमारे ज्ञान एवं कर्म दोनों को रक्षित करो, केवल रक्षित ही नहीं, प्रकृष्ट रुप से रक्षित करो। ज्ञान और कर्म हमारे जीवन-रथ के दो पहिये हैं, जिनमें से एक के अभाव या क्षतिग्रस्त होने की दशा में हमारी प्रगति नहीं हो सकती। हमारा ज्ञान सत्य, समृद्ध एवं विकासशील हो तथा उसके अनुकूल कर्म भी पटु, प्रभावशाली और फलोन्मुख हो, यह सफलता का एक दृढ़ सूत्र है। हे इन्द्र ! हम तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं, हमारी प्रार्थनाओं को पूर्ण करो।

संस्कृतार्थ :- १. कुर्वन्ति कर्माणि इति ते। २. दूढ्यं दुर्धियं पापधियम् (निरु. ५.२) 3. (टुओ) श्वि गतिवृद्ध्योः।

सम्पादकीय

राष्ट्रोत्थान में शिक्षा तन्त्र की भूमिका

सहृदय पाठकों !

भारत हमारा राष्ट्र है। हम इसकी गौरवशाली सन्तान हैं। हमारा चरित्र एवं आचरण, इसके गौरव तथा मर्यादा के अनुसार हो तथा हमारी शिक्षा-दीक्षा और कार्य-कलाप, इसके सम्मान को बढ़ाने वाले हो। यह है वह प्रेरणा और महत्वाकांक्षा जिसे मूर्त रुप देने के लिए स्वदेश-प्रेम, स्वाभिमान, सहिष्णुता, सेवा-भाव, स्वानुशासन, सद्व्यवहार संगठन और स्वाध्याय आदि गुणों को शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षार्थियों में उत्पन्न करने का प्रयास करना नितान्त आवश्यक है। शिक्षाणालय के आचार्य-बन्धु शिक्षणार्थियों के मन में भारत की महानता, भव्यता तथा पावनता के सम्बन्ध में, गौरव के भाव भरें क्योंकि कर्मठ और आदर्शवादी आचार्यों के सदाचरण का विद्यार्थियों पर विशेष प्रभाव होता है। शिक्षकों के आदर्श नेतृत्व में ही, आज के शिक्षार्थी कल के आदर्श राष्ट्र-निर्माता बन सकने में समर्थ है।

हम उस देश में उत्पन्न हुए हैं जिस देश में योगीराज श्रीकृष्ण ने और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जैसे महापुरुष ने जन्म लिया, महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना की, युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा, ऋषि दधीचि जैसे दानी, महर्षि दयानन्द जैसे युगप्रवर्तक महाराजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी, लोकमान्य तिलक जैसे कर्मयोगी, महामना मालवीय जैसे निष्ठावान्, महाराणा प्रताप जैसे प्रणवीर, छत्रपति शिवाजी जैसे शूरवीर और गुरु गोविन्द सिंह जैसे कर्मवीर हुए। सीता, सावित्री और अनसूया जैसी पतिव्रता नारियां हुई, गोस्वामी तुलसीदास और सूरदास जैसे भक्त हुए।

हमारा देश गौरवशाली है, वैभवशाली है। गंगा और गायत्री का देश है। ऋनि-मुनियों की घोर तपस्या, सन्तों की वाणी और यहां की सभ्यता और संस्कृति, हम सब की अमूल्य निधि है। शिक्षक-बन्धुओं का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वे अपने छात्र-बालकों के हृदयों में, शिक्षा के माध्यम से, भारत का वह भव्य और पावन चित्र अंकित करें, जिसके परिणाम-स्वरुप छात्र-बालक कोई ऐसा काम न करें, जो हमारे देश की संस्कृति, प्रतिष्ठा और मर्यादा के अनुकूल न हो।

*शास्त्र कहते हैं - "**क्रतुमयोऽयं पुरुषः, स यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते, यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते**" अर्थात् पुरुष क्रतुमय है, वह जैसा संकल्प करता है, वैसा ही आचरण करता है और जैसा आचरण करता है, फिर वैसा ही बन जाता है। कर्म का आधार विचार ही है। अतः स्पष्ट है कि अच्छे आचरण एवं सच्चारित्र्य के लिये अच्छे विचारों को मन में लाना आवश्यक है। अच्छे शास्त्रों का अभ्यास, श्रेष्ठ पुरुषों का सङ्ग करने और पवित्र वातावरण में रहने से अच्छे और शुभ विचार उत्पन्न हैं। अतः श्रेयस्कामी को सर्वदा-सर्वत्र सच्चिन्तन में ही लगे रहना है और*

बालकों को भी आदर्श राष्ट्र-निर्माण के लिये सच्चिन्तन में लगाना है।

वर्तमान युग में समस्त विश्व-चारित्र्य दौर्बल्य-व्याधि से पीड़ित है। भारतवर्ष भी, इस रोग के जबड़े के आभ्यन्तर में उत्तरोत्तर ग्रस्त होता जा रहा है। आए दिन समाचार-पत्रों के पन्ने घटित वीभत्स दुर्घटनाओं के समाचारों से ओत-प्रोत रहते हैं। आज के भारतीय जीवन में विचारों और भावों की उच्चता की चर्चा मात्र होती है। हम उच्च कोटि के भावराज्य का चिन्तन करते हैं, किन्तु चारित्रिक धरातल के निम्न रहने के कारण यह सब मात्र कल्पना की उड़ान बन कर रह जाता है। इसलिए अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिये यह आवश्यक है कि छात्र-छात्राओं का चरित्र उज्ज्वल हो। उनके जीवन में दैवी सम्पत्ति के लक्षणों का उद्‌भव और विकास हो। अतः स्थितप्रज्ञ, गुणातीत आदर्श महापुरुषों के लक्षण पढ़ें। वैदिक शास्त्रों में महापुरुषों के लक्षण बताए हैं उन्हें अपना आदर्श बना कर अपने और अपने छात्र-छात्राओं के चरित्र को परिष्कृत करना चाहिये, ताकि हमारे राष्ट्र का भविष्य सर्वतोमुखी प्रतिभा से आलोकित हो उठे।

शास्त्रों में शिक्षक और शिक्षार्थियों के विचारों को संभालना के लिये विशेष ध्यान दिया गया है। छात्र-छात्राओं के कोमल और निर्मल अन्तःकरणों में, पहिले से ही जो संस्कार अंकित हो जाते हैं, वे ही उनका चरित्र निर्माण करते हैं। इसलिये छात्रों को पहिले से ही श्रेष्ठ पुरुषों के सङ्ग में तथा सत्शास्त्रों के अभ्यास में लगाना लाभदायक है। जैसे लोगों का संग होता है और जैसे लोगों से व्यवहार होता है और जैसा होने की उत्कट वाञ्छा होती है मानव वैसा ही हो जाता है। सद्विचारों के प्रसार से शिक्षणालय श्रेष्ठ चरित्र वाले छात्रों का निर्माण कर सकते हैं। विगत वर्षों में अपने ही देश के भीतर कुछ विश्व विद्यालयों से ऐसी राष्ट्र विरोधी अनुगूंज सुनाई दी कि प्रत्येक देशभक्त का सिर शर्म से झुक गया। शिक्षा के जिन मन्दिरों में राष्ट्र प्रेम की पवित्र धारा प्रवाहित होकर पूरे राष्ट्र को पावन बना सकती थी, उन स्थानों को मतान्ध मूर्खों ने विद्वेष विस्तार का केन्द्र बनाने की कोशिश की।

विद्यार्थियों के उज्ज्वल चरित्र से विश्व का अभ्युदय होगा। वृक्ष-वृक्ष से जंगल बनता है . यदि एक वृक्ष विकसित, पल्लवित, पुष्पित और फलित होता है तो वह वनश्री की वृद्धि ही करता है। इसी प्रकार समाज का एक-एक छात्र-बालक चरित्रवान् बनाने में योग दे सकता है। यदि उनसे प्रेरणा प्राप्त करके दूसरों ने भी अनुसरण करना प्रारम्भ किया तो वह पूरे समाज की काया पलट कर सकत है। लौकिक अभ्युदय और पारमार्थिक कल्याण के लिये, धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत सदाचार की प्राथमिक आवश्यकता चरित्र-निर्माण का यही प्रथम सोपान है।

व्यक्तियों से समाज तथा समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। उन्नतिशील समाज तथा राष्ट्र के लिये व्यक्तियों का चरित्रशील होना आवश्यक है। शास्त्रानुकूल कर्म या व्यवहार ही चरित्र है। प्राचीन भारत में व्यक्ति का सम्मान था, धन-वैभव का नहीं, इसीलिये भारतवर्ष में श्रीराम और सीता का सदाचार त्रिकालाबाधित सत्य की भान्ति मान्य है - स्वर्णमयी लंका के स्वामी रावण का नहीं। अतएव राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिये शिक्षणालयों के शिक्षकों को प्राचीन शिक्षा-पद्धति का अनुसरण करते हुए अपने शिक्षार्थियों को आदर्श, शुचिशील और चरित्रवान् बनाने का भरसक प्रयत्न करना है, ताकि आज के शिक्षार्थी महापुरुष बनकर राष्ट्र के गौरव, सम्मान, संस्कृति और देश-धर्म-मर्यादा की रक्षा करते हुए आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्र-निर्माण में सफलता प्राप्त कर सकें।

हमारा राष्ट्र समग्र विश्व के लिये राष्ट्रीय चरित्र का सजग प्रहरी के रुप में था। आज असहिष्णुता, क्षेत्रीयता, अखण्ड राष्ट्रीयता की भावना का अभाव, तुच्छ भाषागत विवाद आदि दुर्गुण हमारे अतीत के सभी उज्ज्वल चरित्र को धूमिल और विस्मृत कर चुके हैं। दुःस्थिति आकण्ठ निमग्न हो चुकी है। देश, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति प्रतिक्षण अधोगामी होते जा रहे हैं। नदी की धारा और मानव की प्रवृत्ति अधोगामिनी होती है। उन्हें निम्नगा होने से रोकना और उर्ध्वगामिनी बनाना अत्यन्त ही कठोर कार्य है, जो निष्ठा, तत्परतता तथा दृढ़ संकल्प के बिना सम्भव नहीं है। अतः आवश्यक है कि राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण हेतु मानवीय प्रवृत्ति को उर्ध्वगामिनी बनाया जाये और निष्ठा, लगन तथा तत्परता से एतदर्थ राष्ट्र-

व्यापिनी योजना चला कर, सैद्धान्तिक तथ्यों को शिक्षार्थियों के हृदयों में, शिक्षा के माध्यम द्वारा अंकित करने का भगीरथ प्रयत्न किया जाए। इसी में राष्ट्रीय चरित्र की शाश्वत उपयोगिता निर्विवाद है।

जीवन में किसी भी क्षेत्र में, प्रगति का कार्य तभी सम्भव है, जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र परिस्थितियों की चुनौतियों को स्वीकार कर, संघर्ष करने के लिए तत्पर हों। यह भी एक तप है। उपनिषदों में कहा गया है कि ब्रह्म भी अपना विस्तार तप से ही करने में समर्थ होता है। यदि हम आज मानवीय हृदय की संगीर्णता को छोड़कर तप की शक्ति पहचान लें, तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र इन सबके चरित्र को एक नया आयाम प्राप्त हो सकता है - ऐसा आयाम, जिसमें व्यक्ति समाज और राष्ट्र अणुविराट् के स्पर्श से आभूषित हो सके, धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में सम्बन्धित व्यक्तियों और शिक्षकों को शिक्षार्थियों में तप की इस शक्ति को सैद्धान्तिक रुप में समझाना है और क्रियात्मक रुप में परिणत करने के लिये प्रयास करना है और चरित्र-निर्माण के उस जीवन-दर्शन को जो सत्य को सर्वोपरि मानकर चलता है, शिक्षार्थियों को हृदयङ्गम कराना है। आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि ही छात्र-छात्राओं में स्वच्छ मन को दिव्य आलोक से अलंकृत करने में सक्षम है।

शिक्षार्थियों के चरित्र-गठन की साधना ही उनके जीवन-गठन की आधारशिला है। जब राष्ट्र चरित्रवान् महापुरुषों के नेतृत्व द्वारा परिचालित होता है, तब राष्ट्रवासी अल्प त्याग से भी विपुल समृद्धि का अर्जन करने में समर्थ होते हैं, मनु महाराज द्वारा उपदिष्ट धर्म के लक्षणों में अहिंसा, अस्तेय, सत्य, शौच और इन्द्रियनिग्रह- इन पांच कर्मों का शिक्षकों में होना अनिवार्य है। इन्हीं पांच कर्मों पर मानव-संस्कृति की गगनचुम्बी अट्टालिका स्थिर की जा सकती है। शिक्षक-बन्धुओं को इस पांच कर्मों के अनुसार जीवन-यापन करने के लिए साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों में भी इन्हीं आदर्श कर्मों की प्रेरणा देनी चाहिये ताकि वे अपने राष्ट्र को उच्च बनाने में सक्षम हो सकें।

राष्ट्र को प्रगति-पथ पर अग्रसर करने के लिये शिक्षार्थियों में सदाचार, चरित्र और शील की भावनाएँ आवश्यक ही नहीं प्रत्युत अनिवार्य भी है। हमारे राष्ट्र में प्राचीन काल से ही सदाचार की एक सात्विक सरिता सतत प्रवाहित होती रही है और अजस्र स्रोत प्रवाहमान रहा है। सदाचार के इसी अक्षय स्रोत से हम आज के युद्ध-जर्जर और विषाक्त विश्व के लिये शीतल जल लेकर कल्याण का कार्यक्षेत्र सिक्त कर सकते हैं, मानवता का पथ-प्रशस्त कर सकते हैं और प्रेम का पावन प्रकाश विकीर्ण कर सकते हैं। सदाचार के सोपान पर आरुढ़ होकर ही हमारे भारतवर्ष के भावी कर्णधार शिक्षार्थी स्वर्गीय गौरव और आनन्द की प्राप्ति कर सकते है और चारित्र्य की वाटिका में ही जीवन-पुष्प की सर्वश्रेष्ठ सुगन्ध फैला सकते हैं। अमृतत्व की प्राप्ति ही मानव-जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। सदाचार, शील और चारित्र्य की पावन त्रिवेणी-धारा में गोता लगाए बिना यह अमृतत्व प्राप्त नहीं हो सकता है।

प्रत्येक शिक्षणालय, शिक्षक और शिक्षार्थी का अपने देश के प्रति महान् उत्तरदायित्व होता है। हमारा राष्ट्र भारतवर्ष धर्म और आध्यात्म-विद्या का स्रोत है। हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरुदण्ड मूलभित्ति या जीवन-केन्द्र एकमात्र धर्म ही है। इसीलिये हमें इस धर्मप्राण राष्ट्र में धर्म की नीति के अनुसार चलना है। हमारा नैतिक आचरण उच्च व महान् हो। हमें अपने प्राचीन गौरव को सम्मुख रख कर, हिंसा-प्रतिहिंसा, द्वेष, अत्याचार और भ्रष्टाचार प्रवृत्ति अनैतिक आचारों से बचना है। अपने राष्ट्रीय चरित्र के उत्कर्ष के लिये इच्छुक, लालायित और प्रयासशील होना है। यदि हमारे आचार्य और शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को इस निर्दिष्ट पद्धति पर चलाने का प्रयास करें और उन्हें उनके राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को हृदयङ्गम करा सकें, तभी अपूर्व महिमा से मण्डित भावी भारत राष्ट्र का पुनर्जागरण होगा। तभी हम गर्व कर पाएंगे कि हम उन्हीं युगजन्मा ऋषियों की सन्तति हैं, जिन्होने अपने ज्ञान एवं चारित्र्य बल से दुनियां को आकृष्ट किया था -

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः ॥

- आचार्य कर्मवीर

वैचारिक

दिव्य मातृत्व से ही दिव्य संतान निर्माण संभव.

- डॉ. अर्चना प्रिय आर्य (संस्थापिका एवं अध्यक्षाः संस्कार जागृति मिशन)

पुत्र का निर्माण करने के कारण ही नारी की संज्ञा माता है। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है **"जो करे पुत्र निर्माण माता सोई"** और इसीलिए महर्षि मनु ने मां को दस सहस्र आचार्यों के समान कहा है-

उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता ।
सहस्रं तु पितॄन् माता गौरवेणातिरिच्यते ॥

माँ सन्तान के नाम पर कूड़ा, कचरा पैदा कर धरती मां का बोझ नहीं बढ़ाती थी, बल्कि ऐसी चरित्रवान, जितेन्द्रिय, वीर बहादुर व शक्तिशाली सन्तान का निर्माण करती थी जो भारत माँ के दर्द को दूर करने वाली होती थी। क्योंकि वेदों ने कहा है- **"वीरभोग्या वसुन्धरा"** अर्थात् ये भूमि वीरों के लिए है कायर व कमजोर लोगों के लिये नहीं है। यही कारण था कि पहले यदि नारी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करती थी तो इस बात की शपथ लेती थी। कहते हैं कि सप्तमहर्षि माता अरुन्धती सहित यात्रा कर रहे थे। मार्ग में किसी वस्तु की चोरी हो गई। प्रत्येक अपनी सफाई देने लगा। माता अरुन्धती कहती हैं ***'जो पाप अयोग्य और दुर्बल सन्तान उत्पन्न करने का होता है वह पाप मुझे लगे, यदि मैंने चोरी की हो।'*** यहां स्पष्ट है कि प्राचीन मातायें आयोग्य और दुर्बल सन्तान पैदा करना महापाप समझती थीं।

योगीराज श्रीकृष्ण की वीरता, शौर्य, राजनीतिकता, प्रभुभक्ति, गोमाता प्रेम, सेवा भाव और धर्म शीलता से आप परिचित है, परन्तु इसका मूल भी आपको माता देवकी के अनुपम धैर्य, कष्ट, सहिष्णुता, रुप, तप, वीरता, ईश्वर प्रेम और माता यशोदा की लोरियों में देखना होगा। छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ विजय की प्रेरणा करने वाली माता जीजाबाई थी। **"सिंहगढ़ विजय करो बेटा भगवा ध्वज चलकर फैराओ।"** भक्त ध्रुव का निर्माण करने वाली माता सुनीति थी। हनुमान का निर्माण अंजना ने किया, भीष्म पितामह की व्रतनिष्ठा का मूल उनकी माता गंगा की व्रतसाधना में छिपा है। आल्हा ऊदल की वीरता का रहस्य माता देवलीदेवी की शिक्षायें हैं। गोरा-बादल की प्राण संचारी शक्ति माता जवाहरबाई और हताश पुत्र संजय को धिक्कारते हुए पुनः कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करने वाली वीर माता मदालसा के उदाहरण में सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। वे अपने तीनों पुत्रों विक्रान्त, सुबाहु एवं शत्रुमर्दन को ***शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि*** का उपदेश करके विरक्त बना देती है। चौथे पुत्र अलर्क को भी जब यही उपदेश करने लगी तो राजा चिन्तित हो उठते हैं और कहते हैं, देवि ! इसे भी विरक्त बनाकर मेरी वंश परम्परा उच्छेद करने पर क्यों तुली हो ? इसे प्रवृत्ति मार्ग में लगाओ और उसके अनुकूल ही उपदेश दो। मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार शास्त्र का पण्डित बना दिया। उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान कराया। धर्म, अर्थ और काम तीनों शास्त्रों में वह प्रवीण बन गया। बड़े होने पर माता-पिता ने अलर्क को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चले गये। किसी कवि की पंक्तियां प्रसंगवश पठनीय हैं -

माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर होत।
माता के सिखाये पुत्र दाता और शूर होत॥
माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत।
माता के सिखाये पुत्र जग में मशहूर होत॥

हमारी मातायें, बहिनें, आज भी महर्षि दयानन्द, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल, सरदार भगतसिंह, लाल बहादुर शास्त्री सरीखें लालों को निर्माण देकर वे अपने महान राष्ट्र को फिर जगद्गुरु बनाने में योगदान दे सकती है। इसके लिए उन्हें **"संन्तति निर्माण शास्त्र"** का अध्ययन करना होगा। गर्भाधान से लेकर उपनयन संस्कार

तक इसी विज्ञान का शिक्षण है। मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक विधान है। गर्भाधान प्रक्रिया के पीछे एक स्वस्थ कल्पना और उत्कृष्ट भावना, रहन-सहन किस प्रकार के चित्रों का अवलोकन किस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन, बालक को किसी-किसी प्रकार की लोरियाँ, रहन-सहन आदि किस-किस प्रकार की कहानियां, कविताएँ, गीत कण्ठस्थ कराना, कैसी स्त्रियों का साथ आदि किस प्रकार का शिष्टाचार को सन्तति निर्माण विज्ञान के अनेक विभाग हैं।

खेत में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व खेत को तैयार करना होता है। माँ ही वह खेत है। **"माता निर्माता भवति"** माँ ही निर्मात्री शक्ति है। मातायें ही किसी राष्ट्र और जन-जीवन की आधार शिला है, परन्तु अपनी मनोभूमि को ऐसा बनाने के लिए, मानव जीवन के महत्व, ईश्वर भक्ति और मातृभूमि भक्ति के रहस्य को जानने के साथ ही इस युग के महिमामय क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित सोलह संस्कारों की वैदिक विधि महत्व और प्रक्रिया को समझना आवश्यक होगा। रामप्रसाद बिस्मिल की माँ ने बचपन से ही अपने बच्चे को स्वामी दयानन्द का यह सन्देश सुनाकर **"गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है"** फांसी की रस्सी को चूमने की प्रेरणा दी थी।

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है मानवता से युक्त सच्चे मानव का अकाल। आज यही समझना है कि आदर्श मानवों के इस अकाल को पुरुष नहीं स्त्रियाँ ही दूर कर सकती हैं क्योंकि स्त्री का वास्तविक स्वरुप माता का है और माता निर्माता भवति माता ही राष्ट्र और जीवन की निर्मात्री शक्ति है। **"मातृमान्-पितृमान्, आचार्य वान पुरुषो वेदः"** शतपथ ब्राह्मण का यह वचन है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवें तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता-पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जितना माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए प्रशस्ता धार्मिका माता यस्य स मातृमान् धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर की जैल में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फाँसी की सजा दी जा चुकी थी। भारत के गर्वनर जनरल ने क्षमा माँग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फाँसी से छुटकारा देने का आश्वासन दे दिया। रामप्रसाद बिस्मिल की फाँसी से एक दिन पूर्व उनके पिता उससे मिलने आये और उन्होने पुत्र-प्रेम में विह्वल हो उसे क्षमा मांगने और भविष्य में स्वतन्त्रता के संग्राम में न कूदने की मार्मिक अपील की। पाठकों ! लेकिन एक आर्यवीर को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस बिस्मिल के लिए मृत्यु कोई भय वाली वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में था मां की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हँसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही माँ उसे उठा लेती है यही हाल जीव का है। संसार से जीव को मृत्यु माता उठा लेती है। मृत्यु मानों पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम है, मृत्यु महा निद्रा है, मृत्यु मानो शान्ति है, मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मृत्यु रामप्रसाद बिस्मिल को कैसे भयभीत कर सकती थी। उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् उसकी माँ पहुंची। माँ के पहुंचते ही बिस्मिल ने रोना शुरु कर दिया माँ के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मां ने बेटे को फटकारते हुए कहा कि जब मरने से इतना ही डर लगता था तो इस मार्ग को क्यों चुना ? मां के इन वचनों को सुनकर वो बिस्मिल अपनी आँखों से आंसू पोंछते हुए बोला, माँ मैं मृत्यु से डरकर नहीं रो रहा हूँ। मौत का मुझे कोई गम नहीं है परन्तु मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि मरने के बाद मुझे तुझ जैसी बहादुर माँ की गोद कहां मिलेगी ?

वास्तव में माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किये हैं उनके अनेक उदाहरण दिये जा सकते है। माता कौशल्या, माता अंजना, माता मदलसा, माता

देवकी, माता यशोदा, जीजाबाई आदि के शत सहस्र उदाहरण है। जिन्होने सन्तान निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर धन्यता और अमरता प्राप्त की है।

नारी नर का निर्माण करो।
मनु, व्यास, कृष्ण, राम जैसे पुत्रों को जने।
नारी गुण का आधान करें,
प्रताप, शिवा, गोविन्द बने।

महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। वीर अभिमन्यु की माँ सुभद्रा अपने पति अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान प्राप्त करते-करते सो गई। परिणामतः बालक अभिमन्यु का शिक्षण अधूरा रहा और वह चक्रव्यूह से बाहर न निकल सकने के कारण पराजित हुआ। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज को राजमाता जीजाबाई ने गर्भकाल से ही शिक्षण दिया था। उनका उद्देश्य था कि वह बालक गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक एवं हिन्दू राष्ट्र का पुनरुत्थान करने वाला बने। इसलिए उन्होने बालक शिवाजी के चरित्र का निर्माण करने वाला संस्कारप्रद वातावरण गर्भकाल से ही उपलब्ध कराया। संत ज्ञानेश्वर की माँ भी अनेक कष्ट सहकर राष्ट्रीय स्वाभिमान का एवं भक्ति से परिपूर्ण बालक का निर्माण किया और समाज हिताय समर्पित कर दिया। **"चिन्ता करितों विश्वाची"** यह वाक्य कहने वाला बालक नारायण कीं माँ सूर्य की उपासना करती थी। सूर्योपासक माता राणुबाई ने सूर्यसम दिव्य, तेजस्वी, विश्व की चिन्ता करने वाले सुपुत्र को जन्म दिया। यही बालक स्वामी रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य है कि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास के पृष्ठों में छिपे हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि माता के प्रयत्नों के परिणामस्वरुप बालक की वैसी ही निर्मित हुई, जैसा वह चाहती थी।

माँ मार्गदर्शक होती है। वह जैसा चिज बालक के मानस पर अंकित करती है, बालक वैसा ही बनता है। एक बार बातों-बातों में बालक नरेन्द्र ने कह दिया कि मैं तो कोचवान बनूंगा। ममतामयी माँ ने तुरन्त स्थिति को संभालकर कहा ठीक है तुम कोचवान ही बनना परन्तु श्रीकृष्ण जैसे। इतना कहकर उन्होने अर्जुन का रथ हाँकते श्रीकृष्ण का चित्र दिखाया। हम देखते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के रुप में जाना जाने वाला यह बालक हिन्दू तत्व चिन्तन का सारथी बना और उसकी गूँज को विश्व गगन में फैला दिया।

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ उन्नर्ता के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनावस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

आज की माताओं को विचारना है कि उसे कैसा साहित्य पढ़ना होगा, घर का वातावरण कैसा हो। उसके मन में हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसे जागृत हो ? तभी वह भावी नागरिक को धर्मयुक्त कर्त्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो। यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारणा है। मातृत्व का यह केवल आज श्रृंगार भोग-विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है, अपितु समझ-बुझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान् पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग-विलास में मस्त रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्रीराम माता कौशल्या के संस्कारों का प्रतिफल है। हमारे देश की माताओं को भोगवादी संस्कृति से दूर रहना होगा। एक रोटी को बाँटकर खाने की प्रेरणा माँ ही अन्तःकरण में जाग्रत करती है। जब यहां के नागरिक भोगवाद से दूर रहकर, आर्य तत्वज्ञान को जीवन में उतारकर, स्वार्थ विहीन, भ्रष्टाचार मुक्त, दिव्य, तेजस्वी राष्ट्र के निर्माण में क्षमतावान बनेंगे तो देश समुन्नत होगा। यही दिव्य भाव माँ के हृदय में चाहिए। दिव्य मातृत्व, दिव्य नागरिक निर्माण करेगा और नागरिक निर्माण करेंगे समुन्नत राष्ट्र।

देवियों देश की जाग जाये अगर।
युग स्वयं ही बदलता चला जावेगा।

पता : ५२, ताराधाम कालोनी, टाऊनशिप (मथुरा)

वैचारिक

इच्छित वस्तु कैसे प्राप्त हो

- महात्मा चैतन्यमुनि

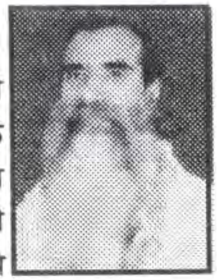

व्यक्ति यदि संसार में आया है तो निश्चित-रुप से उसकी कुछ कामनाएँ होती है, कुछ इच्छाएँ होती है। इच्छाओं और कामनाओं के बिना संसार में कोई भी व्यक्ति नहीं है और रह सकता भी नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस संबंध में कहते हैं - **इस संसार में कर्म करने वाले जीव और फल देने वाला ईश्वर है।** यहां यह जानना चाहिए कि कामना के बिना कोई आंख का पलक भी नहीं हिल सकता। इस कारण जीव कामना करे, परन्तु धर्म सम्बन्धी कामना करें, अधर्म की नहीं। यह निश्चय कर जानना चाहिए कि जो इस विषय में मनुजी ने कहा है, वह वेदानुकूल है। जैसे इस संसार में अति कामना प्रशंसनीय नहीं और कामना के बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता इसलिए धर्म की कामना करनी और अधर्म की नहीं, क्योंकि वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और वेदोक्त धर्म का आचरण करना आदि कामना इच्छा के बिना कभी सिद्ध नहीं हो सकती। इस संसार में तीनों काल में इच्छा के बिना कोई क्रिया नहीं दिख पड़ती जो-जो कुछ किया जाता है, सो-सो सब इच्छा ही का व्यापार है। इसलिए श्रेष्ठ वेदोक्त कामों की इच्छा करनी इतर दुष्ट कामों की नहीं। इस कथन का भाव स्पष्ट है कि हमें कामना तो करनी है मगर हाँ, हमें इस बात का निरीक्षण-परीक्षण निरन्तर करते रहना चाहिए कि हमारी कामनाएँ किस प्रकार की है। व्यक्ति की ऐसी कामनाएँ भी कदापि नहीं करनी चाहिए जिससे अपना तो हित होता हो मगर किसी दूसरे का अहित होता है। हम ऐसी कामनाएँ ही करें जिससे अपना तो हित हो ही मगर किसी दूसरे का अहित भी न हो जाए। हम बढ़े मगर किसी को हटाकर हम न बढ़ें... हम चलें मगर किसी को गिराकर हम न चलें... हम इस वाक्य को जीवन में साथ लेकर चले कि - **परहित सरस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥** धर्म-अधर्म की इससे और अधिक कोई अच्छी व्याख्या नहीं हो सकती है कि दूसरों का हित करना ही धर्म और किसी दूसरे को पीड़ा पहुंचाना ही अधर्म है। ये भावना यदि व्यक्ति के मन में निरन्तर बनी रहे तो वह कामना तो करेगा मगर उस कामना को पूरी करने में वह किसी दूसरे का कदापि अहित नहीं करेगा।

हमारी कामना भले ही अच्छी हों मगर केवल कामनाएँ कर लेने से ही कामनाओं की पूर्ति नहीं होती। बल्कि उसके लिए प्रयास करने अपेक्षित है। यदि चिन्तन किया जाए तो पता चलेगा कि किसी भी उपलब्धि के लिए कुछ पड़ा है जिन्हें पार करने पर ही हमें इच्छित वस्तु प्राप्त हो सकती है। उन पड़ावों को हम इस रुप में मान सकते हैं- पूर्वजन्म के अर्जित संस्कार, तीव्र इच्छा शक्ति, संकल्प, पर्याप्त साधन, कार्य करने की सही-सही विधि और तप अर्थात् कठोर परिश्रम। व्यक्ति जब इस संसार में आता है तो अपने साथ अपने पूर्व जन्म के भी कुछ संस्कार साथ में लाता है। हालांकि वे संस्कार भी हमारे अपने ही कर्म होते हैं और उसे ही मुख्यतः हम भाग्य के नाम से पुकारते हैं। जहां कर्म और भाग्य की तुलना की जाती है तो प्रमाणित रुप से यही निर्णय निकलता है कि क्योंकि भाग्य का निर्माण भी हमारे कर्मों से ही होता है अतः कर्म ही प्रमुख है। जो हमारा भाग्य है या पूर्व जन्म के संस्कार है अब उनमें तो इस जन्म में किसी प्रकार का परिवर्तन किया नहीं जा सकता है। अतः उस रुप में तो हम उन संस्कारों के अधीन है मगर इस जन्म में हम कर्म करने में स्वतन्त्र है अतः अब आगे का भाग्य हम स्वयं अपने कर्मों के द्वारा निर्मित कर सकते हैं। यहां किसी भी इच्छित वस्तु के लिए पूर्व जन्म का महत्व हम इस रुप में विवेचित करना चाहते हैं कि इस जन्म में भी कुछ कर्मों को करने की प्रेरणा व सहयोग हमारे पूर्व जन्म के संस्कार भी देते हैं। जैसे कि उपासना के संस्कारों के बारे में गीता में कहा गया है कि ये उपासना के संस्कार

व्यक्ति के साथ रहते हैं यही कारण है कि कोई-कोई व्यक्ति बचपन से ही वैरागी हो जाता है। दूसरा गीता में कहा गया है कि जिस व्यक्ति के सूक्ष्म शरीर पर उपासना के संस्कार होते हैं उसका अगला जन्म ज्ञानवृद्ध परिवारों में होता है। महर्षि दयानन्द जी भी कहते हैं कि उपासना के संस्कारों वाले व्यक्ति का जन्म विद्वान् माता-पिता के यहां होता है। पूना में एक प्रवचन में भी महर्षि जी ने कहा है कि उपासना करने वाले के उपासना के संस्कार अगले जन्म में उसके साथ जाते हैं ... इस प्रकार इस जन्म में भी इच्छित वस्तु प्राप्त होने में ये संस्कार सहायक होते हैं ...

किसी भी कामना को पूरा करने के लिए दूसरी बात कही गई है कि उस कामना को पूरा करने की मन में तीव्र इच्छा होनी चाहिए। जितनी ही वह इच्छा तीव्र होगी व्यक्ति को उठानी ही सफलता प्राप्त होगी। क्योंकि तीव्र इच्छा का ही दूसरा नाम संकल्प है। संकल्प का सीधा सा अर्थ होता है कि एक बार जिस कार्य को करने की मन में ठान लें उसे पूरा करने में चाहे कितने ही व्यवधान आएँ मगर अपने प्रयास को विराम नहीं दो है ... पलायन नहीं करना है बल्कि उन समस्त व्यवधानों को दूर करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति में अहर्निश लगे रहना है .. आगे कहा कि उस इच्छित वस्तु को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त साधन भी होने चहिए। इस बात को हम इसी प्रकार से समझ सकते हैं कि संसार के जितने भी भौतिक पदार्थ हैं ये सब हमारे साध्य नहीं है बल्कि साधन है और इन साधनों का प्रयोग हमें इच्छित वस्तु प्राप्त करने के लिए करते रहना चाहिए। एक बात यह कही गई है कि कार्य करने की सही विधि होनी चाहिए। यह भी बहुत ही महत्वपूर्ण बिन्दू है। किसी भी वस्तु व लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए उसे प्राप्त करने की सही विधि यदि हमारे पास नहीं है तो मानों हवा में तीर चलाने जैसी ही बात हो जायेगी। इसलिए हम किसी भी क्षेत्र में कार्य आरंभ करें मगर उस कार्य को करने की व्यक्ति को सही-सही विधि का अनुपालन करना पड़ेगा। यदि विधि ही सही नहीं है तो सफलता प्राप्त करना दिवास्वप्न के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। उपरोक्त बिन्दुओं का अनुपालन हो भी जाए मगर उस इच्छित वस्तु को प्राप्त करने के लिए यदि कठोर तप अर्थात् कठोर परिश्रम नहीं किया जायेगा तो भी उसकी प्राप्ति असंभव है। कहा गया है - अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतः धनम्। अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम्। आलसी को विद्या कहां, विद्याविहीन के पास धन कहां, धनहीन के मित्र कहां और मित्र के बिना सुख कहां हो सकता है... A lazy person can't have knowledge, a man without knowledge can't have wealth, man without wealth can't have friends and friendless man can't' have relief and peace।

एक व्यक्ति जिस मार्ग से अपने कार्यालय को जाता था उस मार्ग में एक भिखारी बैठा रहता था। उस व्यक्ति ने एक दिन उसे कुछ सहयोग देना चाहा और उसने अपनी जेब से एक सिक्का निकाला। मगर उसने वह सिक्का उसके हाथ में नहीं दिया बल्कि उसे दिखाकर उसके सामने वाली नाली में फैंक दिया। भिखारी उठा और बहुत देर तक ढूंढने पर उसे वह सिक्का मिल गया। दूसरे दिन भी उस व्यक्ति ने सिक्का नाली में ही फैंका और उस भिखारी ने कुछ देर के परिश्रम के बाद उसे प्राप्त कर लिया। जब तीसरे दिन भी उस व्यक्ति ने भिखारी के हाथ में सिक्का न देकर सामने की नाली में फैंक दिया तो भिखारी ने उससे पूछा कि आप मुझे सीधा-सीधा सिक्का न देकर इस नाली में क्यों फैंक देते हैं ? उस व्यक्ति ने बहुत ही सुन्दर एवं सार्थक उत्तर दिया कि मैं तुम्हें यह सीखाना चाहता हूँ कि परिश्रम का फल ही मीठा होता है तथा व्यक्ति को भीख नहीं मांगनी चाहिए बल्कि परिश्रम करके अपना पेट पालना चाहिए ...।

पता - महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी
हिमाचल प्रदेश १७५०१८

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त

ऋषि दयानन्द 'सत्य' को सर्वोपरि मानते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि - "जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं।"

आध्यात्मिक

प्रभु प्राप्ति के लिए विद्वान् व संयमी से ज्ञान आवश्यक

- डॉ. अशोक आर्य

मानव सदा ही प्रभु की शरण में रहना चाहता है किन्तु वह सब उपाय नहीं करता जो, प्रभु शरण पाने के अभिलाषी के लिए आवश्यक होते हैं। यदि हम प्रभु की शरण में रहना चाहते हैं तो हमारी प्रत्येक चेष्टा, प्रत्येक यत्न बुद्धि को पाने के उद्देश्य से होना चाहिए। दूसरे हम सदा ज्ञानी, विद्वान् लोगों से प्रेरणा लेते रहे तथा हम सदा उन लोगों के समीप रहें, जो विद्वान् हों, संयमी हों, ज्ञानी हों। ऐसे लोगों के समीप रहते हुये हम उनसे ज्ञान प्राप्त करते रहें। इस बात को यह मन्त्र अपने उपदेश में हमें बता रहा है। मन्त्र हमें इस प्रकार उपदेश कर रहा है -

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः।
उप ब्रह्माणि वाघतः॥ (ऋग्वेद १.३.५)

इस मन्त्र में चार बातों की ओर संकेत किया गया है -

१. इन्द्रिया वश में हो :- जीव ने विगत मन्त्र में परमपिता परमात्मा से जो प्रार्थना की थी - उसका उत्तर देते हुये पिता इस मन्त्र में हमें उपदेश कर रहे हैं कि हे इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव ! हे इन्द्रियों को अपने वश में कर लेने वाले जीव। अर्थात् प्रभु उस जीव को सम्बोधन कर रहे हैं, जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया है। उस पिता का एक नियम है कि वह पिता उसे ही अपने समीप बैठने की अनुमति देता है, उसे ही अपने समीप स्थान देता है, जो अपनी इन्द्रियों के आधीन न होकर अपनी इन्द्रियों को अपने आधीन कर लेता है। जो इन्द्रियों की इच्छा के वश में नहीं रहता अपितु इन्द्रियां जिसके वश में होती है। अतः इन्द्रियों पर आधिपत्य पा लेने में सफल रहने वाला जीव जब उस प्रभु को पुकारता है तो ऐसे जीव की प्रार्थना को प्रभु अवश्य ही स्वीकार करता है तथा जीव को कहता है कि हे इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाले जीव। तू आ मेरे समीप आकर स्थान ले, मेरे समीप आकर बैठ।

२. बुद्धि सूक्ष्म हो :- हे जीव ! तू अपने सब प्रयास, सब यत्न, सब कर्म बुद्धि को पाने के लिए, बुद्धि को बढ़ाने के लिए ही करता है। तू सदा बुद्धि से ही प्रेरित रहता है। बुद्धि सदा तुझे कुछ न कुछ प्रेरणा करती रहती है। तू जितने भी कार्य करता है, वह सब तू या तो बुद्धि से करता है अथवा तू जो भी करत है, वह सब बुद्धि को पाने के यत्न स्वरुप करता है। तेरी सब प्रेरणाएँ बुद्धि को पाने के लिए प्रेरित होती है। इतना ही नहीं तू जितनी भी चेष्टाएँ करता है, जितने भी यत्र करता है, जितना भी परिश्रम करता है, जितना भी प्रयास करता है, वह सब भी तू बुद्धि को पाने के लिए ही करता है। तू अपने इस यत्न को निरन्तर बनाए रख। तेरे इस यत्न से ही तेरी बुद्धि सूक्ष्म हो सकेगी, इस सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा तू इस ब्रह्माण्ड में मेरी महिमा, मेरी सृष्टि को देख पाने में सफल होगा।

३. उत्तम बुद्धि पाने का प्रयास :- तेरे अन्दर जो यह तीव्र बुद्धि आई है, जो सूक्ष्म बुद्धि का स्रोत बह रहा है, वह तू ने अपने ब्रह्मचर्य काल में अपनी ज्ञानी, विद्वान् तथा सूक्ष्म बुद्धि से युक्त आचार्यों से, गुरुजनों से, प्रेरित होकर एकत्र किया है। इतना ही नहीं तू अब भी उत्तम बुद्धि को पाने के लिए अपनी अभिलाषा को बनाए हुए हैं। इस कारण तूं ने अब भी उत्तम विद्वान् पुरुषों की शरण को नहीं छोड़ा है। तू सक्ष्म बुद्धि से युक्त गुरुजनों के चरणों में ही रहने का यत्न कर रहा है। अर्थात् इतनी बुद्धि का स्वामी होने पर भी बुद्धि पाने का यत्र तूने छोड़ा नहीं है अपितु अब भी तू इसे पाने के लिए निरन्तर प्रयास में लगा है।

४. सोम रक्षक से मार्ग दर्शन :- हे उत्तम बुद्धि के स्वामी जीव ! तू सोम का सम्पादन करने वाला है। तू प्रतिक्षण अपने जीवन में ऐसे यत्र, यथा प्राणायाम दण्ड, बैठक आदि में व्यस्त रहता है, जिन से सोम की तेरे शरीर में उत्पत्ति होती ही रहती है। तू ने अपना जीवन इतना संयमित व नियमित कर लिया है कि सोम का कभी तेरे शरीर में नाश हो ही नहीं सकता अपितु सोम तेरे शरीर में सदा ही रक्षित है। इतना ही नहीं तू सदा ऐसे लोगों का, ऐसे विद्वानों का, ऐसे गुरुजनों का साथ पाने व सहयोग लेने के लिए, मार्गदर्शन पाने के लिए यत्नशील रहता है, जो सोम को अपने यत्र से अपने शरीर में उत्पन्न कर, उसकी रक्षा करते हैं। सोम रक्षण से वह मेधावी होते हैं। ऐसे मेधावी व्यक्ति के, ऐसे ज्ञान के भण्डारी के, ऐसे संयमी व्यक्ति के समीप रह कर तू उससे ज्ञान रुपी बुद्धि को और भी मेधावी बनाने के लिए यत्नशील है।

पता : पॉकेट १/६१, रामप्रस्थ ग्रीन से. ७,
वैशाली-२०१०१०

अन्वेषणात्मक

"वेद एवं वैदिक साहित्य के स्वाध्याय का महत्व"

– मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य जीवन और और इतर प्राणियों के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि मनुष्य अपनी बुद्धि की सहायता से विचार व चिन्तन सहित सत्यासत्य का निर्णय करने व अध्ययन-अध्यापन करने में समर्थ है जबकि अन्य प्राणियों को ईश्वर ने मनुष्यों के समान बुद्धि नहीं दी है। मनुष्यों को दो प्रकार का ज्ञान होता है जिसे स्वाभाविक व नैमित्तिक ज्ञान कहते हैं। स्वाभाविक ज्ञान को सीखना नहीं होता वह स्वभावतः स्वमेव ईश्वर प्रदत्त आत्मा में होता है और नैमेत्तक ज्ञान वह होता है जिसे मनुष्य आचार्यों, माता-पिता, स्वाध्याय, विचार, चिन्तन व अपने अनुभव आदि से सीखता है। पशु व पक्षी आदि प्राणियों में स्वाभाविक ज्ञान होता है और कई अर्थों में वह मनुष्यों से भी अधिक होता है परन्तु वंह नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। मनुष्य अपनी बुद्धि की सहायता से माता-पिता, विद्वानों, आचार्यों व स्वाध्याय आदि से अपने ज्ञान में निरन्तर वृद्धि करता रहता है। ऐसा करके ही वह विद्वान्, ज्ञानी, वैज्ञानिक, चिन्तक व मनीषी बन जाता है। जिस प्रकार माता-पिता, आचार्य अपने शिष्यों को ज्ञान देते हैं, उसी प्रकार स्वाध्याय से भी वह ज्ञान मनुष्य प्राप्त कर सकता है। वास्तविकता यह है कि हमारे माता-पिता व आचार्य भी स्वाध्याय व अध्ययन से ही ज्ञान प्राप्त करते हैं। अतः पुस्तकों के अध्ययन से भी अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

हमारे ऋषि मुनि शास्त्रों में लिख गये है कि मनुष्यों को स्वाध्याय करने में प्रमाद नहीं करना चाहिए। स्वाध्याय सन्ध्या का अंग है और यह प्रतिदिन किया जाता है। स्वाध्याय के अन्तर्गत स्वयं अपनी आत्मा को जानना भी होता है और इसके साथ वेद एवं ऋषिकृत वैदिक साहित्य का अध्ययन व उसका प्रवचन आदि से प्रचार करना भी कर्त्तव्य होता है। जो मनुष्य जिस पदार्थ को कहीं से व किसी से लेता है और उसे अपने पास ही सीमित कर लेता है वह उचित नहीं होता। वह ऋणी कहलाता है और उसे वह ऋण ब्याज व सूद सहित चुकाना पड़ता है। ऋणी मनुष्य का कर्त्तव्य होता है कि उसने अपने आचार्यों से जो सीखा है उसे दूसरों को भी सिखाये। ऐसा करने पर ही सृष्टि क्रम भली प्रकार से चल सकता है। महाभारतकाल के बाद हम पाते है कि अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था क्षीण व निर्बल हो गई थी जिस कारण महाभारत काल तक जो ज्ञान हमारे ऋषि व विद्वानों के पास उपलब्ध था, उसका प्रवचन व अध्यापन द्वारा प्रचार न होने से देश व संसार में अज्ञान फैल गया जिसका परिणाम अन्धविश्वास व सामाजिक असमानता आदि के रुप में सामने आया। यदि महाभारतकाल के बाद भी वेदों का पठन पाठन व प्रवचन आदि जारी रहता तो कोई कारण नहीं था कि संसार में अन्धविश्वास फैलते और आज जो मिथ्या मत-मतान्तरों की वृद्धि हुई व हो रही है, उनका कहीं किंचित अस्तित्व होता। अन्धविश्वास व सभी समस्याओं का मूल कारण महाभारतकाल के बाद विद्या वृद्धि में बाधाओं का होना ही सिद्ध होता है।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि वह महाभारतकाल के बाद पहले ऐसे विद्वान्, आचार्य व ऋषि थे, जिन्हें वेदों के सत्य अर्थों का ज्ञान था। उन्होंने अपने अध्ययन, ऊहा व अनुसंधान से इस तथ्य को जाना था कि वेद सृष्टि की आदि में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। वेदों के सभी मन्त्र सत्य ज्ञान के उपदेशों से भरे हुए हैं। सभी सत्य विद्याओं का मूल भी वेदों में विद्यमान है। उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका ग्रन्थ लिखकर अपनी इस मान्यता पर प्रकाश डाला एवं इसे सत्य प्रमाणित किया। ईश्वर के सच्चे स्वरुप व गुण-कर्म-स्वभाव का जो यथार्थ ज्ञान वेदों से उपलब्ध होता है वह संसार के अन्य किसी ग्रन्थ से नहीं होता। सारा वैदिक साहित्य वेदों को आधार बनाकर ही प्राचीन ऋषियों ने रचा था। इन ग्रन्थों में प्रमुख ग्रन्थ ६ वेदांग, ४ ब्राह्मण ग्रन्थ, ६ दर्शन ग्रन्थ और मुख्य ११ उपनिषदें आदि हैं। विशुद्ध मनुस्मृति भी वेदों के विधानों

के आधार पर महर्षि मनु द्वारा प्रणीत ग्रन्थ हैं, जिसमें मानव धर्म का व्याख्यान है। यदि कोई मनुष्य अपराध करता है तो राजा द्वारा उसके दण्ड का विधान भी मनुस्मृति में है। राजनीति सहित राजा के कर्त्तव्यों एवं शासन व्यवस्था पर भी इस ग्रन्थ में प्रकाश डाला गया है। विद्वानों को इसका अध्ययन एवं प्रचार करना चाहिए जिसमें जन समान्य को यह ज्ञान हो सकता है कि सृष्टि के आरम्भ से ही वैदिक ज्ञान परम्परा व संस्कृति-सभ्यता कितनी समृद्ध एवं उन्नत थी। यह भी बताते कि वेद सहित सभी प्रमुख वैदिक साहित्य का हिन्दी में अनुवाद व भाष्य उपलब्ध है जिससे हिन्दी पढ़ने की योग्यता रखने वाला साधारण व्यक्ति भी वेदों का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

स्वाध्याय से मनुष्य की बुद्धि एवं आत्मा की उन्नति वा विकास होता है। ईश्वर व जीव सहित जड़ सृष्टि वा ब्राह्माण्ड विषयक सभी शंकाओं व प्रश्नों का समाधान भी होता है। मनुष्य जन्म क्यों हुआ व हमारा भविष्य एवं परजन्म किन बातों से उन्नत व अवनत होते हैं, इसका ज्ञान भी हम स्वाध्याय से प्राप्त कर सकते हैं। ईश्वर, माता-पिता, समाज, देश व विश्व के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य है और उनका पालन किस प्रकार से किया जा सकता है, इसका ज्ञान भी हमें स्वाध्याय से मिलता है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य दुःखों से पूर्ण निवृत्ति है। दुःखों से पूर्ण निवृत्ति का नाम मोक्ष है। इसकी प्राप्ति के लिए करणीय कर्त्तव्यों का विधान ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों एवं दर्शन व उपनिषद आदि ग्रन्थों में मिलता है। जो मनुष्य वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करता है उसे ईश्वर, जीवात्मा, सृष्टि, उपासना सहित भौतिक विषयों का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। स्वाध्याय से मनुष्य देव, विद्वान्, आर्य, ईश्वरभक्त, वेदभक्त, मातृ-पितृ भक्त, आचार्यभक्त, देशभक्त, समाजसेवी व समाज सुधारक सहित आदर्श जीवन व चरित्र से पूर्ण मानव बनता है। मत-मतान्तर के ग्रन्थ मनुष्य का ऐसा विकास नहीं करते जैसा कि वेद व वैदिक साहित्य से होता है। हमारे विश्व प्रसिद्ध आदर्श महापुरुष राम, कृष्ण, दयानन्द, चाणक्य, शंकराचार्य जी आदि सभी वैदिक साहित्य की देन थे। इन लाभों को प्राप्त करने के लिए सभी मनुष्यों को वेद एवं वैदिक ग्रन्थों का नित्य प्रति स्वाध्याय अवश्य ही करना चाहिए जिससे उनका सम्पूर्ण विकास व उन्नति होगी और उनका जीवन ज्ञान की प्राप्ति से सुखी व सन्तुष्ट होगा। ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है कि मनुष्य को जो सुख ज्ञान की प्राप्ति से मिलता है उतना व वैसा सुख धन व सुख के साधनों से भी नहीं मिलता। अतः स्वाध्याय से अपना ज्ञान बढ़ाना सभी मनुष्यों का कर्त्तव्य व धर्म है।

मनुष्य जन्म की सफलता भी स्वाध्याय करने व उससे अर्जित ज्ञान से ईश्वरोपासना व समाज के हितकारी कार्य करने में ही है। स्वाध्याय से हम विवेक को प्राप्त होते हैं जिसके भक्ष्य और अभक्ष्य पदार्थों का भी ज्ञान व विवेक होता है। स्वाध्यायशीलता से मनुष्य को अच्छे संस्कार मिलते हैं जिससे वह दूसरों का शोषण व अन्याय नहीं करता और न ही अपना शोषण व दूसरों को अपने साथ अन्याय करने देता है। स्वाध्याय से आत्मा व शरीर दोनों का समुचित विकास होता है। मनुष्य रोग रहित व दीर्घायु भी हो सकता है। स्वाध्यायशील मनुष्य समाज का जितना उपकार कर सकता है उतना स्वाध्याय रहित मनुष्य सम्भवतः नहीं कर सकता। स्वाध्याय से मनुष्यों की आत्मिक शक्ति में भी वृद्धि होती है। ज्ञान से उसे अच्छे कार्यों को करने में उत्साह उत्पन्न होता है। वह जानता है कि वह जो भी शुभ कर्म करेगा उसका लाभ कई गुणा होकर उसे भविष्य व परजन्म में मिलेगा। उसके प्रारब्ध में उन्नति होगी और उससे उसका भावी जन्म श्रेष्ठ योनि व अच्छे परिवेश में होगा। ऐसे अनेक लाभ स्वाध्याय से मिलते हैं। दैनिक यज्ञ, परोपकार व परसेवा की प्रेरणा भी स्वाध्याय से मिलती है। अतः वेद वैदिक साहित्य सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश व अन्य ग्रन्थों एवं विद्वानों के वेद विषयक साहित्य का अवषश्य ही अध्ययन करना चाहिए। इससे लाभ ही लाभ होगा, हानि कुछ नहीं होगी। ईश्वर का सहाय व रक्षा आदि भी प्राप्त होगी। ईश्वर के सत्य स्वरुप को जानकर हम उसकी यथार्थ रीति से उपासना कर उपासना के लाभों से समृद्ध होंगे।

पता : १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

उपादेयात्मक

"भूख"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

पैदल चलते-चलते पण्डित जी थक कर चूर हो चुके थे, लेकिन मंजिल थी कि करीब आने का नाम ही नहीं ले रही थी, उन्हे ऐसा लग रहा था कि रास्ता बहुत लम्बा होता जा रहा है, रास्ता वैसे भी जंगल से होकर जाता था, मौसम भी सुहाना था, जब पंडित जी घर से निकल थे, नाश्ता-पानी ठीक-ठाक करके चले थे घर से, चलते समय पत्नी ने कहा भी था, सूरज चढ़ते ही जब गर्मी बढ़ने लगेगी तो प्यास लगेगी, इसलिए थोड़ा सा पानी साथ लेते जाओ। लेकिन पण्डित जी ने कह दिया, "अरे! कौन सा दूर है राम खिलावन का गांव.... जल्दी ही पहुंच जाऊगा...... वैसे भी एक दो मील तो प्यासा भी चल सकता हूँ.....''।

"जैसी आपकी इच्छा...." कह कर पण्डिताईन चुप हो रही थी। अब जबकि पण्डित जी को प्यास के साथ-साथ भूख भी सताने लगी तो उन्हें अब पत्नी की सलाह रह-रहकर याद आने लगी थी, वह कितने दूर तक का सोचती है।

पण्डित जी जब जवान थे तो पांच-सात मील का रास्ता उनके लिये कोई अहमियत नहीं रखता था और वे शीघ्र ही रास्ता तय कर लेते थे, लेकिन जैसे-जैसे जवानी साथ छोड़ती जा रही थी कि छोटा रास्ता भी बहुत लम्बा लगने लगता था।

अब भी उनके साथ कुछ ऐसा ही हो रहा था।

प्यास से गला सूखता जा रहा था, लेकिन प्यास बुझाने के लिये कहीं भी जल की दो बूंदे तक उपलब्ध नहीं थी, दूर तक जंगल ही जंगल दिखाई दे रहा था, थकान से चूर होकर पण्डित जी एक पेड़ के नीचे कुछ देर आराम करने के लिये बैठ गये, सोचा शायद प्यास कुछ कम हो जाये, लेकिन प्यास क्या कोई पेड़ की छाँव में बैठने से कम होने वाली थी, उससे छुटकारा पाने के लिये तो सिर्फ पानी ही चाहिये।

कुछ देर आराम कर भगवान का नाम ले पण्डित जी शेष रास्ता तय करने के लिए चल पड़े, इस आशा से कि कुछ दूर चलने के बाद शायद रास्ते में कहीं पानी मिल जाये, वैसे तो इस जंगल में कोई आश नहीं है, रास्ते में पानी मिलने की, उस पर अब तो प्यास के साथ भूख भी सताने लगी थी और पैदल चलने के कारण तो वह वैसे भी भी बढ़ती ही जा रही थी।

पण्डित जी से जब आगे चलना मुश्किल हो गया तो कुछ आराम करने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठे ही थे कि पास की झाड़ी से किसी से चलने से हुई आवाज ने पण्डित जी के रोंगटे खड़े कर दिये, वे किसी अंजाने भय से मन ही मन काँप से उठे कि कहीं जंगली जानवर उन पर घात तो नहीं लगा रहा है, आँखों में समा गयी भय की स्थिति से उन्होंने आवाज की दिशा की ओर देखा तो उन्हें एक बकरी चलती हुई दिखायी दी, जिसने पण्डित जी के मन में एक आशा का संचार कर दिया।

पण्डित राधे श्याम द्विवेदी मथुरा के प्रख्यात कर्मकाण्डी पण्डित थे, नगर में अथवा आसपास के गाँवों में न केवल प्रसिद्ध थे, बल्कि प्रतिष्ठित भी थे, किसी के घर में पूजा पाठ हो, बच्चे का नामकरण हो, मुण्डन संस्कार हो, शादी ब्याह का अवसर हो अथवा कोई अन्य मंगल कार्य हो, पण्डित राधे श्याम द्विवेदी ने पूजा सम्पन्न करने की स्वीकृति दे दी तो वह व्यक्ति स्वयं को धन्य मानता था।

उनके चरण स्पर्श को ही यजमान एवं उनके अतिथि अपना सौभाग्य मानते थे, उनका आशीर्वाद लेने लालायित रहते थे और आज के जमाने में सरकार द्वारा बनाये गये कानून के बावजूद भी बेचारे शूद्र उनके पैर छूकर आशीर्वाद लेना तो दूर, पास तक फटक नहीं पाते थे। पण्डित जी का गलती से यदि किसी शूद्र से सामना हो भी जाये तो पण्डित द्विवेदी जी इस में अपना अपमान समझते थे। उसे उल्टी-सीधी सुनाने में चूक नहीं करते थे और गंगा

जल मिले तो पानी से तुरन्त ही स्नान करके स्वयं का शुद्धिकरण किया करते थे, यही उनके संस्कार थे और यही उनकी सीख।

बकरी को देख पण्डित जी के मन में एक आशा का संचार हुआ कि अवश्य ही इस बियाबान में भी आसपास कोई न कोई प्रामी अवश्य ही रहता है। तभी तो यह बकरी इस जंगल में चरने आ गयी है और उनके जीवन को अब कोई खतरा नहीं है।

थोड़ी सी आशा के संचार ने पण्डित जी के मस्तिष्क को चलायमान कर दिया, यदि इस बकरी के पीछे-पीछे चला जाये तो यह बकरी निश्चय ही अपने मालिक के घर पहुँचेगी और वहां पहुंच कर अपनी प्यास बुझायी जा सकती है। यह सोचते ही पण्डित जी के कदम बकरी की ओर उठ गये।

रास्ते से हट कर झाड़ियों के बीच से होते हुए पण्डित जी बकरी के पीछे-पीछे चल रहे थे और बकरी भी किसी अंजान व्यक्ति से डर कर अपने मालिक के घर की ओर बढ़ रही थी। कभी तेज चल कर दूरी बढ़ा लेती और जब तक पण्डित जी उसके पास पहुंचते, तब तक किसी पेड़ के दो-चार पत्ते खा लेती थी, अन्ततः घर आने पर बकरी ने अपने आप को सुरक्षित अनुभव किया।

जंगल खत्म हो चुका था, पण्डित जी थकान से चूर अब गिरे कि तब गिरे, लेकिन सामने एक झोपड़ी नुमा घर देखकर पण्डित जी को डूबते को तिनके का सहारा लगा, जल्दी से तेज कदमों से आगे बढ़ कर पण्डित जी ने झोपड़ी का दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से काले रंग के एक भीष्मकाय शरीर के व्यक्ति ने दरवाजा खोला, अपने दरवाजे पर पण्डित जी को खड़ा देखकर उस व्यक्ति को बहुत आश्चर्य हुआ और प्रसन्नता से पूछा, "पण्डित जी आप! इस गरीब की झोपड़ी में यहां, इस जंगल में कैसे?"

थकान से चूर पण्डित जी के गले से मुश्किल से शब्द निकले, "मैं रास्ता भटक गया हूँ.... थका हूँ... साथ ही भूखा प्यासा भी हूँ ..।"

"अहो भाग्य हमारे... जो आप हमारे आँगन में पधारे... हमारे घर में तो जैसे आप साक्षात् भगवान बनकर आये हैं..." कहते हुए उस व्यक्ति ने पण्डित जी का स्वागत किया, "आप अन्दर आइये... मैं आपके बैठने के लिये आसन लाता हूँ...." फिर अपनी पत्नी को आवाज देकर बोला, "रज्जो..... ! अरी ओ रज्जो.... देख तो सही.... आज हमारे घर पण्डित जी आये हैं, जा जल्दी से पानी ले आ और इनके लिये भोजन भी परोस दे....".।

"भई तुम्हारा नाम क्या है... ?" पण्डित जी ने स्वाभाविक रुप में पूछा। "पण्डित जी मुझे सभी राम जी कहते हैं...." अपना नाम बताकर वह व्यक्ति झोपड़ी में अन्दर चला गया पण्डित जी के लिये आसन लाने।

आसन बिछा कर रामजी ने अनुरोध किया, बैठिये पण्डित जी .... ! पण्डित जी के बैठने पर रज्जो पानी से भरा लोटा और गिलास रख भोजन की परोसी थाली लाने अन्दर चली गयी। सामने भोजन की थाली और पानी देख पण्डित जी की आंखों में चमक जैसे लौट आयी थी, उन्होंने पानी से भरा गिलास उठा कर पहले सूख गया गला तर करने की सोची, गिलास उठा कर पण्डित जी ने जैसे ही होठों से लगाना चाहा कि राम जी बोला, "ठहरिये पण्डित जी.....! इससे पहले कि आप हमारे घर का पानी पियें, हम आपको यह जानकारी दे देना जरुरी समझते हैं कि हम कौन जाति के हैं.... ? जिससे कि बाद में आप हम पर कोई धोखा करने का आरोप न लगायें..." फिर वह कुछ रुक कर आगे बोला, "मैं और मेरा परिवार जाति से चमार हैं.....।"

रामजी के शब्द सुनकर पण्डित जी तत्काल उठ खड़े हुए और चीखते हुए बोले, "दुष्ट कहीं के ... ! तूने पहले क्यों नहीं बताया..." कहते-कहते पण्डित जी धरती में गिर पड़े।

रामजी ने सहारा देकर उन्हें आराम से बैठाया और हाथ जोड़कर क्षमा माँगते हुए बोला, पण्डित जी ! मैने आपको छू लिया, इस अपराध के लिये क्षमा चाहता हूँ, लेकिन इस समय आप चल पाने की स्थिति में नहीं है, थोड़ी देर यहीं आराम करिये और शान्ति से भोजन कीजिये, जिससे शरीर में कुछ ताकत भी आ जायेगी... इस समय आप अपने धर्म और जीवन में से जिसे भी बचाना चाहें

बचा लें, यह आपका अपना अधिकार है... हम तो ठहरे अनपढ़ गँवार आदमी... हम आपको क्या शिक्षा देंगे, पर इतना अवश्य कहेंगे कि हमें भी यह बता दो कि किस धर्म ग्रन्थ में लिखा है कि शूद्र के हाथ का छुआ खाने से पाप लगता है... जब जमीन में अनाज पैदा करते समय भेदभाव नहीं करते तो फिर... "जानबूझकर राम जी आगे चुप हो रहा और सवालिया नजरों से पण्डित जी को देखने लगा", खैर ! अब तो मैं काम पर जा रहा हूँ... आप आराम कीजिये... यहां नहीं तो वहां, पेड़ के नीचे छाँव में.... कह कर वह पण्डित जी को प्रणाम करके चला गया, रज्जो भी अपने काम में जूट गयी।

भूख-प्यास के मारे पण्डित जी का बुरा हाल हो रहा था, पेट में चूहे कूद रहे थे, गला प्यास से सूखा जा रहा था, कुछ भी बोलते समय जीभ तालू से चिपक-चिपक जा रही थी। होंठ भी सूख कर पपड़ा चुके थे, कुछ समय यदि यही हाल और रहा तो हो सकता है कि पण्डित जी की दशा और भी नाजुक हो जाये।

अच्छा भोजन देख आवश्यकता से अधिक खाने वाले पण्डित जी आज भोजन के लिये तरस रहे थे, पेट की अंतड़ियों में ऐंठन शुरु हो गयी थी, लेकिन धर्म के नाम पर पण्डित जी का मस्तिष्क जैसे कि एकदम सजग हो जाता था। इस समय वे धर्म-संकट में फँसे थे, सामने भोजन है, पानी भी है, लेकिन उसे खाने से धर्म-भ्रष्ट होने का डर है और यदि भोजन नहीं करते तो प्राण जाने का भय है, इसी सोच में उनके हाथ कभी खाना उठाने के लिये आगे बढ़ते तो कभी पीछे हटते।

लेकिन मन में हो रहा द्वन्द्व और सामने रखा भोजन मिलकर पण्डित जी के मन में तर्क-वितर्क प्रस्तुत कर रहे थे, "भला कौन देखता है कि किसका खा रहा हूँ ? कौन सा इस खाने पर किसी का नाम लिखा है अथवा जब मैं जिन्दा ही नहीं रहूंगा तो वह धर्म-ईमान, यह पण्डिताई किस काम आयेगी ?"

सूनी-सूनी आँखों से पण्डित जी कभी थाली में परोसे गये भोजन की ओर देखते और कभी सोचते, एक ओर धर्म है तो दूसरी ओर यह जीवन है... इनमें से बचाये तो किसे.... ? "काफी देर तक शान्त मन पण्डित जी यही सब सोचते रहे कि तभी उनके मस्तिष्क में अचानक ही एक प्रश्न उभरा, यदि मैं संसार में जीवित ही नहीं रहूंगा तो यह धर्म-कर्म किस काम का.... ?"

यह सोचते ही पण्डित जी के शरीर में एक स्फूर्ति सी आ गयी, एक क्षण गँवाये बिना उन्होंने पानी का गिलास मुँह से लगा कर एक ही साँस में खाली कर दिया और भोजन पर ऐसे टूट पड़े कि यदि उन्होंने थोड़ी सी भी देरी कर दी तो भोजन की थाली उनके सामने से उठा ली जायेगी।

पता : चन्दनगाँव, जिला-छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

"भाई"

वह शराब, सिगरेट, तम्बाकू का सेवन करता था। कभी-कभी जुआ, सट्टा में हाथ आजमाता था। किन्तु अपनी बहिन के लिए वह एक ऐसा लड़का तलाश रहा था, जिसमें ये सारे दुर्गुण न हो। लड़का मिला भी उसे। उसने बहिन का विवाह कर दिया। जब उसके विवाह की बारी आई तो लड़की के भाई ने कहा क्या आप .... शराब, सिगरेट.... आदि पीते हैं। उसने सहज भाव से कहा, हाँ, ये मेरे शौक है और इससे साबित होता है कि मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी है। लड़की के भाई ने उसे अपनी बहिन के लिए योग्य वर नहीं माना।

इस तरह वह कई लड़की पक्ष द्वारा अस्वीकृत किया गया तो उसने गुस्से से जाति के लोगों को धिक्कारना आरम्भ कर दिया। उन्हें संकीर्ण मानसिकता का बताना शुरु कर दिया। उसने ये भी कहना शुरु कर दिया कि दहेज लोभियों को लड़की देंगे मगर सच बोलने वालों को नहीं। तभी तो समाज की लड़कियाँ भागकर दूसरे समाज, धर्म के लोगों से विवाह कर लेती है। फिर कहां जाती है ? इज्जत, मान-सम्मान। लानत है ऐसे समाज पर।

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर

दिनांक ४ जून से १७ जून २०१८

स्थान – गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से आयोजित शिविर में **सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती** की अध्यक्षता में शाखा नायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का संतुति अनुशासन का पूर्णतः पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक भी किया जा सकता है।

प्रवेश शुल्क ५०० रु.

पाठ्यपुस्तक शिविर की ओर से दी जायेगी।

आवश्यक सामान – गणवेश खाकी हाफ पैण्ट, सफेद शर्ट, सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, लोटा एवं दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएँ।

नोट : १. शिविर में प्रवेश आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण को ही दिया जायेगा। शिविरार्थी की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिए। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा।

२. शिविर में सन्ध्या-यज्ञ एवं प्राथमिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मार्ग :– नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली से मैट्रो द्वारा सराय उतरें। बस द्वारा बदरपुर, सराय से रेलवे फाटक पार कर गुरुकुल पहुंचे।

–: निवेदक :–

ऋषिपाल आचार्य	**प्रवीण शास्त्री**	**सत्वीर आर्य**	**मा. रामपाल**	**विनय आर्य**
शिविर संयोजक	प्रधान व्यायाम शिक्षक	महामंत्री सार्व.आ.वी.द.	प्रधान आ.प्रति. सभा, हरयाणा	महामंत्री, आ.प्रति. सभा दिल्ली
९८११६८७१२४	९४६७०७१७३३	९४१४७८९४६१	९४१६८७४०६५	९९५८१७४४४१

स्पन्दन

"खरी कमाई"

- आचार्य कर्मवीर

आप कहेंगे, तुम सेवा की और प्रेम की बातें करते हो। हमें यह सब मालूम है कोई नई चीज नहीं बता रहे तुम। पर जिन्हें हर घड़ी पेट की आग बुझाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा हो उनके लिए प्रेम और सेवा क्या बेमानी नहीं लगती। उन्हें तो सबसे पहले रोटी चाहिए। किसी भूख से व्याकुल भूखे से यदि आप सवाल करेंगे- दो और दो कितने होते हैं तो उसका जवाब चार नहीं चार रोटी होगी। बात बड़ी सीधी है -

भूखे भजन ना होय गोपाला,
ले ले अपनी कंठी माला।

आपकी बात सोलह आने सच है। भूखे को रोटी चाहिए और रोटी उसे हर हालत में मिलनी चाहिए, लेकिन उतने से आदमी को सन्तोष कहां होता है। पहली बात तो यह है कि आदमी मेहनत नहीं करता, काम से बचता है दूसरी बात यह है कि वह खाने के लिए कम बचाने के लिए अधिक कमाता है। किसी महापुरुष ने लिखा है - हर मेहनती आदमी को रोटी पाने का अधिकार है मगर धन इकट्ठा करने का किसी को अधिकार नहीं। सच कहें तो धन इकठ्ठा करना चोरी है। जो भूख से अधिक धन लेता है वह जान में या अनजान में दूसरों की रोजी छिनता है।

आज दुनियां में यही हो रहा है। एक ओर इतनी कमाई है कि आदमी खाकर हजम नहीं कर सकता दूसरी ओर इतना अभाव है कि आदमी पेट भरकर खा भी नहीं सकता। समाज सेवी अन्ना हजारे ने भारत में रहने वाले लोगों की बड़ी सटीक परिभाषा दी- वे कहते हैं यहां तो तरह के लोग हैं एक वे जो कहते हैं हम क्या खाएँ ? दूसरे वे हैं जो कहते हैं हम क्या क्या खाएँ ? जहां ढेर होता है वहां गड्ढा अपने आप हो जाता है।

एक बुढ़िया की मजेदार कहानी है। एक गरीब बुढ़िया थी। बेचारी गरीबी की मारी थी। एक दिन किसी ने उससे कहा - भाई पैसे से पैसा आता है। वह बेचारी कहीं से एक पैसा जुटा लाई और पैसे के ढेर के पास खड़ी होकर लगी उसे पैसा दिखाने। थोड़ी देर में उसका वह पैसा भी ढेर में चला गया। वह रोने लगी। तब किसी ने उसे समझाया- तू जानती नहीं पैसा ढेर में जाता है। आज यही बात देखने में आ रही है। कुछ लोग कहते हैं कि अमीरी और गरीबी किस जमाने में नहीं रही ? पुराने समय से लेकर अब तक यह भेद चला आ रहा है। सब बराबर कैसे हो सकते हैं ?

इस तर्क में बड़ी भूल है। ईश्वर ने सारे ईंसानों को एक सा बनाया है। आदमी आदमी में कोई अन्तर नहीं रखा। अन्तर तो स्वयं आदमी ने पैदा किया है एक आदमी दिमाग से काम करता है। दूसरे शरीर से। पहले को हम बड़ा मानते हैं और उसे अधिक देते हैं दूसरे को किसान मजदूर कहकर छोटा मानते हैं और उसकी कम कीमत लगाते हैं। लेकिन यह न्याय नहीं है। जो दिमागी काम करता है उसे भी खाने को अन्न चाहिए और अन्न बिना शरीर की मेहनत के नहीं मिल सकता। शरीर से काम करने वाले का सहारा चाहिए। इस तरह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता। पर आज का समाज उन्हें एक दूसरे का पूरक या साथी मानता कहां है। बुद्धि से काम करने वाला शरीर की मेहनत को छोटा और घटिया मानता है और उससे बचता है। वह मानता है कि मजबूर से मेहनत लेने का उसे अधिकार है। वह यह नहीं मानता कि मजबूर के प्रति उसका कोई कर्त्तव्य भी है। फल यह कि ईश्वर की दी हुई समानता को आदमी ने न सिर्फ नष्ट कर दिया है बल्कि आदमी के बीच ऊँच-नीच की छोटे बड़े की अमीरी-गरीबी की चौड़ी खाई भी खोद दी है। हमारे महापुरुष इसी खाई को पाटना चाहते थे। महात्मा गांधी जो बार-बार रामराज्य की बात करते थे उसके पीछे यही भावना थी कि समता का समरसता का संचार हो जनमानस में। आजादी से पहले हमारे क्रान्तिकारी भी यही सपना देखते थे -

इलाही वह भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे।

अपनी ही जमीं होगी, और अपना आसमां होगा ॥

किन्तु आजादी मिलने के बाद भी हमारा सपना साकार होने के बजाय उसी संकीर्णता में पूरा समाज अभी भी डूबा पड़ा है बलिदानों का कोई प्रतिफल नहीं मिला। वे चाहते थे कि एक भी आदमी बिना अन्न के ना रहे, सबको पहनने को कपड़े मिले, सबको रहने को घर मिले। सबको पढ़ाई-लिखाई की सुविधा मिले, और हारी बीमारी के लिए दवा-दारु की व्यवस्था हो, यानी सबको विकास की समान सुविधाएँ हों, उनका तो यहां तक कहना था कि जब तक एक भी आँख में आंसू है, तब तक लड़ाई की मंजिल पूरी न हो सकेगी।

यह खाई एकदम दूर हो जाय तब तो कहना ही क्या ? लेकिन आज के जमाने में वह बिल्कुल दूर न हो सके तो कम तो हो जाना चाहिए। हमारे समाज की बुनियाद नए मूल्यों पर रखी जानी चाहिए। धन को अब तक बहुत प्रतिष्ठा मिल चुकी है। उसकी जगह अब सच्चे इंसान को उसकी इज्जत मिलनी चाहिए। बौद्धिक और शारीरिक श्रम के बीच जो दीवार खड़ी हो गई है वह टूटनी चाहिए। श्रम का शोषण बंद होना चाहिए। हमारे सारे काम इंसान को गरीबों के उस प्रतिनिधि को जिसे हमारे पूर्वजों ने दरिद्रनारायण कहा था, सामने रखकर होने चाहिए, भारत इसीलिए भारत बना रहा कि उसने इंसानियत को ऊँची जगह दी। मानवता को वही मान देने का समय अब आ गया है।

"सबके साथ सबका विकास" का नारा मोदी जी ने दिया है यदि जमीन पर पूरी तरह उतर आए तब बात बने। हर आदमी अपनी क्षमता के अनुसार काम करें और जरूरत के अनुसार पाए, न शोषण करे न होने दे, अपने अधिकार कर्त्तव्य सब जाने सब माने, सादगी से रहे, प्रेम का अटूट नाता हो, जब समाज का बुनियाद ऐसे आधारों से बनेगा, तब इस धरा पर स्वर्ग का अवतरण हो जाएगा।

अव्यवस्थित चित्तस्य प्रसादोऽपि भयङ्कर

क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः रुष्टास्तुष्टाः क्षणे क्षणे ।
अव्यवस्थितचित्तानां, प्रसादोऽपि भयङ्करः ॥ (कस्यचित्)

भावार्थ :- अनेक व्यक्ति संसार में ऐसे भी पाए जाते हैं, जो मिनटो में तो प्रसन्न हो जाते हैं और मिनटों में ही नाराज हो जाते हैं। वे क्षण-क्षण में प्रसन्न और अप्रसन्न होते हैं ? उनका हृदय अस्थिर एवं मनः अत्यन्त चलायमान रहता है। इस प्रकार के चलायमान अन्तःकरण के महापुरूषों की कृपा भी भयङ्कर सिद्ध होती है। क्योंकि - उनकी प्रसन्नता का कोई प्रश्न नहीं ? अव्यवस्थित चित्त ही जो ठहरे। अतएव बुद्धिमान पुरुषों को ऐसे लोगों से सदैव सावधान रहना चाहिए।

- सुभाषित सौरभ

भूल—सुधार

अप्रैल अंक "अग्निदूत" के पृष्ठ ३२ पर प्रकाशित आर्यसमाज आर्यनगर दुर्ग द्वारा आयोजित "श्री रामनवमीं धूमधाम से मनाई गई" समाचार के अन्तर्गत कार्यक्रम में हिस्सेदार के तौर पर श्री दिलीप आर्य का नाम भूलवश मुद्रित हो गया है। वस्तुतः उपर्युक्त महानुभाव गत अन्तरंग सभा बैठक के निर्णयानुसार आचारहीनता के दोषी पाए जाने से आर्यसमाज से निष्कासित हैं। असावधानीवश प्रकाशित हो गया था।

- सम्पादक

दलित मसीहा के रुप में वीर सावरकर

२८ मई जयंती पर विशेष

- अजीत आर्य

क्रांतिकारी वीर सावरकर का स्थान भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अपना ही एक विशेष महत्व रखता है, सावरकर जी पर लगे आरोप भी अद्वितीय थे, उन्हें मिली सजा भी अद्वितीय थी। एक तरफ उन पर आरोप था अंग्रेज सरकार के विरुद्ध युद्ध की योजना बनाने का, बम बनाने का और विभिन्न देशों के क्रांतिकारियों से सम्पर्क करने का तो दूसरी तरफ उनको सजा मिली थी। पूरे ५० वर्ष तक दो सश्रम आजीवन कारावास।

इस सजा पर उनकी प्रतिक्रिया भी अद्वितीय थी कि ईसाई मत को मानने वाली अंग्रेज सरकार कबसे पुनर्जन्म अर्थात् दो जन्मों को मानने लगी। वीर सावरकर को ५० वर्ष की सजा देने के पीछे अंग्रेज सरकार का मंतव्य था कि उन्हें किसी भी प्रकार से भारत अथवा भारतियों से दूर रखा जाये जिससे की वे क्रांति की अग्नि को न भड़का सके। वीर सावरकर के लिए शिवाजी महाराज प्रेरणा स्रोत थे, जिस प्रकार औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को आगरे में कैद कर लिया था, उसी प्रकार अंग्रेज सरकार ने भी वीर सावरकर को कैद कर लिया था, जैसे शिवाजी महाराज ने औरंगजेब की कैद से छूटने के लिए अनेक पत्र लिखे उसी प्रकार वीर सावरकर ने भी अंग्रेज सरकार को पत्र लिखे, पर उनकी अंडमान की कैद से छुटने की योजना असफल हुई जब उसे अनसुना कर दिया गया, तब वीर शिवाजी की तरह वीर सावरकर ने भी कूटनीति का सहारा लिया क्योंकि उनका मानना था कि अगर उनका सम्पूर्ण जीवन इसी प्रकार अंडमान की अंधेरी कोठरियों में निकल गया तो उनका जीवन व्यर्थ ही चला जायेगा।

इस रणनीति के तहत उन्होने सरकार से मुक्त होने की प्रार्थना करी, जिसे सरकार द्वारा मान तो लिया गया पर उन्हें रत्नागिरी में १९२४ से १९३७ तक राजनीतिक क्षेत्र से दूर नजरबंद रहना पड़ा। विरोधी लोग इसे वीर सावरकर का माफीनामा, अंग्रेज सरकार के आगे घुटने टेकना और देशद्रोह आदि कहकर उनकी आलोचना करते हैं जबकि यह तो आपातकालीन धर्म अर्थात् कूटनीति थी।

मुस्लिम तुष्टिकरण को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार ने अंडमान द्वीप के कीर्ति स्तम्भ से वीर सावरकर का नाम हटा दिया और संसद भवन में भी उनके चित्र को लगाने का विरोध किया। जीवन भर जिन्होने अंग्रेजों की यातनायें सही मृत्यु के बाद उनका ऐसा अपमान करने का प्रयास किया गया। उनका विरोध करने वालों में कुछ दलित वर्ग के राजनीति करने वाले नेता भी थे, जिन्होने अपने राजनैतिक मंसूबों को पूरा करने के लिए उनका विरोध किया था। दलित वर्ग के मध्य कार्य करने का वीर सावरकर का अवसर उनके रत्नागिरी आवास के समय मिला।

८ जनवरी १९२४ को जब सावरकर जी रत्नागिरी में प्रविष्ट हुए तो उन्होने घोषणा करी कि वे रत्नागिरी दीर्घकाल तक आवास करने आए हैं और छुआछूत समाप्त करने का आन्दोलन चलाने वाले हैं। उन्होने उपस्थित सज्जनों से कहा कि अगर कोई अछूत वहां हो तो उन्हें ले आये और अछूत महार जाति के बंधुओं को अपने साथ बैल गाड़ी में बैठा लिया। पाठकजन उस समय में फैली जातिवाद की कुप्रथा का आसानी से अंदाजा लगा सकते है कि किसी भी शूद्र को सवर्ण के घर की ओसरी में भी प्रवेश वर्जित था। नगर पालिका के भंगी को नारियल की नरेटी में चाय डाली जाती थी। किसी भी शूद्र को नगर की सीमा में धोती के स्थान पर अगोछा पहनने की ही अनुमति थी। रास्ते में महार की छाया पड़ जाने पर अशौच की

पुकार मच जाती थी। कुछ लोग महार के स्थान पर बहार बोलते थे जैसे की महार कोई गाली हो, यदि रास्ते में महार की छाया पड़ जाती थी तो ब्राह्मण लोग दोबारा स्नान करते थे। न्यायालय में साक्षी के रुप में महार को कटघरे में खड़े होने की अनुमति न थी। इस भयंकर दमन के कारण महार जाति का मानो साहस ही समाप्त हो चुका था।

इसके लिए सावरकर जी ने दलित बस्तियों में जाने का, सामाजिक कार्यों के साथ-साथ धार्मिक कार्यो में भी दलितों के भाग लेने का और सवर्ण एवं दलित दोनों के लिए पतितपावन मंदिर की स्थापना का निश्चय लिया गया जिससे सभी एक स्थान पर साथ-साथ पूजा कर सके।

रत्नागिरी प्रवास के १०-१५ दिनों के बाद में सावरकर जी को मढ़िया में हनुमान जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण मिला, उस मंदिर के देवल पुजारी से सावरकर जी ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में दलितों को भी आमंत्रित किया जाये जिस पर वह पहले तो न करता रहा पर बाद में मान गया। श्री मोरेश्वर दामले नामक किशोर ने सावरकर जी से पूछा कि आप इतने साधारण मनुष्य से व्यर्थ इतना चर्चा क्यूं कर रहे थे ? इस पर सावरकर जी ने कहा कि सैकड़ों लेख या भाषणों की अपेक्षा प्रत्यक्ष रुप से किये गये कार्यों का परिणाम अधिक होता है, अबकी हनुमान जयती के दिन तुम स्वयं देख लेना।

२९ मई १९२९ को रत्नागिरी में सत्यनारायण कथा आयोजन किया गया जिसमें सावरकर जी ने जातिवाद के विरुद्ध भाषण दिया जिससे की लोग प्रभावित होकर अपनी-अपनी जातिगत बैठक को छोड़कर सभी महार-चमार एकत्रित होकर बैठ गए और सामान्य जलपान हुआ। १९३४ में मालवान में अछूत बस्ती में चायपान, भजन कीर्तन, अछूतों को यज्ञोपवित ग्रहण, विद्यालय में समस्त जाति के बच्चों को बिना किसी भेदभाव के बैठाना, सहभोज आदि हुए। रत्नागिरी से जाते समय सावरकर जी के बिदाई समारोह में समस्त भोजन अछूतों द्वारा बनाया गया जिसे सभी सवर्णों-अछूतों ने एक साथ ग्रहण किया था।

एक बार शिरगांव में एक चमार के घर पर पूजा थी, जिसमें सावरकर जी को आमंत्रित किया गया, सावरकर जी ने देखा कि चमार महोदय ने किसी भी महार को आमंत्रित नहीं किया था, उन्होंने तत्काल उससे कहा कि आप हम ब्राह्मणों को अपने घर में आने पर प्रसन्न होते हो पर मैं आपका आमंत्रण तभी स्वीकार करूंगा जब आप महार जाति के सदस्यों को भी आमंत्रित करेंगे, उनके कहने पर चमार महोदय ने अपने घर पर महार जाति वालों को आमंत्रित किया था। १९२८ में शिवभांगी में विठ्ठल मंदिर में अछूतों के मंदिरों में प्रवेश करने पर सावरकर जी का भाषण हुआ। १९३० में पतितपावन मंदिर में शिवू भंगी के मुख से गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ ही गणेश जी की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित की गयी।

१९३१ में पतितपावन मंदिर का उद्घाटन स्वयं शंकराचार्य श्री कूर्तकोटि के हाथों से हुआ एवं उनकी पाद्यपूजा चमार नेता श्री राज भोज द्वारा की गयी थी। वीर सावकर ने घोषणा करी कि इस मंदिर में समस्त हिन्दुओं को पूजा का अधिकार है और पुजारी पद पर गैर ब्राह्मण की नियुक्ति होगी।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण वीरसावरकर जी के जीवन से हमें मिलते हैं जिससे दलित उद्धार के विषय में उनके विचारों को उनके प्रयासों को हम जान पाते हैं। सावरकर जी के बहुआयामी जीवन के विभिन्न पहलुओं में से सामाजिक सुधार के रुप में वीर सावरकर को स्मरण कर मूल उद्देश्य दलित समाज को विशेष रुप से सन्देश देना है जिसने राजनीतिक हितों के लिए सवर्ण जाति द्वारा अछूत जाति के लिए किये सुधार कार्यों की उपेक्षा कर दी है और उन्हें केवल विरोध का पात्र बना दिया है। - ***आर्यनगर दुर्ग***

– सुविचार –

वह व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता जो यह नहीं जानता कि वह चाहता क्या है ?

- सिगमंड फ्रायड (प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक)

जिंदगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, खुद अच्छे बन जाओ। आपसे मिलकर शायद किसी की तलाश पूरी हो जाए।

२८ मई जयन्ती

- आचार्य मुकेश आर्य

स्वाभिमानी शेर - महाराणा प्रताप

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया रविवार विक्रम संवत १५९७ तदानुसार ९ मई १५४०-१९जनवरी १५९७) उदयपुर, मेवाड़ में शिसोदिया राजवंश के राजा थे। उनका नाम इतिहास में वीरता और दृढ़ प्रण के लिये अमर है। उन्होने कई सालों तक मुगल सम्राट अकबर के साथ संघर्ष किया। महाराणा प्रताप सिंह ने मुगलों को कई बार युद्ध में भी हराया। उनका जन्म राजस्थान के कुम्भलगढ़ में महाराणा उदयसिंह एवं माता राणी जीवत कँवर के घर हुआ था। १५७६ के हल्दीघाटी युद्ध में २०,००० राजूपतों को साथ लेकर राणा प्रताप ने मुगर सरदार राजा मानसिंह के ८०,००० की सेना का सामना किया। शत्रु सेना से घिर चुके महाराणा प्रताप को झाला मानसिंह ने अपने प्राण देकर बचाया और महाराणा को युद्ध भूमि छोड़ने के लिए बोला। शक्ति सिंह ने अपना अश्व देकर महारामा को बचाया। प्रिय अश्व चेतक की भी मृत्यु हुई। यह युद्ध तो केवल एक दिन चला परन्तु इसमें १७००० लोग मारे गए। मेवाड़ को जीतने के लिए अकबर ने सभी प्रयास किये। महाराणा की हालत दिन-प्रतिदिन चितिंत हुई। २५००० राजपूतों को १२ साल तक चले उतना अनुदान देकर भामा शाह भी अमर हुए।

हल्दीघाटी युद्ध :- यह युद्ध १८ जून १५७६ ईस्वी में मेवाड़ तथा मुगलों के मध्य हुआ था। इस युद्ध में मेवाड़ की सेना का नेतृत्व महारामा प्रताप ने किया था। इस युद्ध में महाराणा प्रताप की तरफ से लड़ने वाले एकमात्र मुस्लिम सरदार थे - हकीम खां सूरी।

इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह तथा आसफ खाँ ने किया। इस युद्ध का आँखो देखा वर्णन अब्दुल कादिर बदायूनी ने किया। इस युद्ध को आसफ खाँ ने अप्रत्यक्ष रुप से जेहाद की संज्ञा दी। इस युद्ध में बींदा के झालामान ने अपने प्राणों का बलिदान करके महाराणा प्रताप के जीवन की रक्षा की। वहीं ग्वालियर नरेश राजा रामशाह तोमर भी अपने तीन पुत्रों कुँवर शालीवाहन, कुँवर भवानी सिंह, कुँवर प्रताप सिंह और पौत्र बलभद्र सिंह एवं सकड़ों वीर तोमर राजपूत योद्धाओं समेत चिरनिद्रा में सो गया।

इतिहासकार मानते हैं कि इस युद्ध में कोई विजय नहीं हुआ। पर देखा जाए तो इस युद्ध में महाराणा प्रताप सिंह विजयी हुए अकबर के विशाल सेना के सामने मुट्ठीभर राजपूत कितने देर तक टिक पाते पर ऐसा कुछ नहीं हुए ये युद्ध पूरे एक दिन चला और राजपूतों ने मुगलों के छक्के छुड़ा दिये थे सबसे बड़ी बात यहां यह है कि युद्ध आमने-सामने लड़ा गया था। महाराणा प्रताप की सेना ने मुगल की सेना को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया था और मुगल सेना भागने लग गयी थी।

सफलता और अवसान :- ई. पू. १५७९ से १५८५ तक पूर्व उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार और गुजरात के मुगल अधिकृत प्रदेशों में विद्रोह होने लगे थे और महाराणा प्रताप भी एक के बाद एक गढ़ जीतते जा रहे थे। अतः परिणामस्वरुप अकबर उस विद्रोह को दबाने में उल्जा रहा और मेवाड़ पर से मुगलों का दबाव कम हो गया। इस बात का लाभ उठाकर महारामा ने ई.पू. १५८५ में मेवाड़ मुक्ति प्रयत्नों को और भी तेज कर लिया। महाराणा की सेना ने मुगल चौकियां पर आक्रमण शुरु कर दिए और तुरंत ही उदयपुर समेत ३६ महत्वपूर्ण स्थान पर फिर से महारामा का अधिकार स्थापित हो गया। महारामा प्रताप ने जिससमय सिंहासन ग्रहण किया, उस समय जितने मेवाड़ की भूमि पर उनका अधिकार था, पूर्ण रुप से उतने ही भूमि भाग पर उनकी सत्ता फिर से स्थापित हो गई थी। बारह वर्ष के संघर्ष के बाद भी अकबर उसमें कोई परिवर्तन न कर सका। और इस तरह महाराणा प्रताप समय की लंबी अवधि के संघर्षके बाद मेवाड़ को मुक्त कराने में सफल रहे और ये समय

मेवाड़ के लिए एक स्वर्ण युग साबित हुआ। मेवाड़ पे लगा हुआ अकबर ग्रहण का अंत ई. पू. १५८५ में हुआ। उसके बाद महाराणा प्रताप उनके राज्य की सुख-सुविधा में जुट गए, परन्तु दुर्भाग्य से उसके ग्यारह वर्ष के बाद ही १९ जनवरी १५९७ में अपनी नई राजधानी चावंड़ में उनकी मृत्यु हो गई।

महाराणा प्रताप सिंह के डर से अकबर अपनी राजधानी लाहौर लेकर चला गया और महाराणा के स्वर्ग सिधारने के बाद आगरा ले आया।

महाराणा प्रताप सिंह के मृत्यु पर अकबर की प्रतिक्रिया :- अकबर महाराणा प्रताप का सबसे बड़ा शत्रु था, पर उनकी यह लड़ाई कोई व्यक्तिगत द्वेष का परिणाम नहीं था, हालांकि अपने सिद्धान्तों और मूल्यं की लड़ाई थी। एक वह था जो अपने क्रूर साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था, जबकि एक तरफ यह था कि अपनी भारत माँ की स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहा था। महाराणा प्रताप के मृत्यु पर अकबर को बहुत ही दुःख हुआ क्योंकि हृदय से वो महाराणा प्रताप के गुणों का प्रशंसक था और अकबर जानता था कि महाराणा प्रताप जैसा वीर कोई नहीं है इस धरती पर। यह समाचार सुनकर अकबर रहस्यमय तरीके से मौन हो गया और उसकी आँख में आंसू आ गए।

महाराणा प्रताप के स्वर्गावसान के वक्त अकबर लाहौर में था और वहीं उसे खबर मिली कि महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई। अकबर की उस वक्त की मनोदशा पर अकबर के दरबारी दुरसा आढ़ा ने राजस्थानी छंद में जो विवरण लिखा हो कुछ इस तरह है :-

अस लेगो अणदाग पाग लेगो अणनामी
गो आड़ा गवड़ाय जीको बहतो धुरवामी
नवरोजे न गयो न गो आसतां नवल्ली
न गो झरोखा हेठ जेठ दुनियाण दहल्ली
गहलोत राण जीती गयो दसण मूंद रसणा डसी
निसा मूक भरिया नैण तो मृत शाह प्रतापसी

अर्थात् हे गुहिलोत राणा प्रतापसिंह तेरी मृत्यु पर शाह यानि सम्राट ने दांतों के बीच जीभ दबाई और विश्वास के साथ आंसू टपकाए। क्योंकि तूने कभी भी अपने घोड़ों पर मुगलिया दाग नहीं लगने दिया। तूने अपनी पगड़ी को किसी के आगे झुकाया नहीं, हालांकि तू अपना आडा यानि यश या राज्य तो गवा गया लेकिन फिर भी तू अपने राज्य के धुरे को बांए कंधे से ही चलाता रहा। तेरी रानियां कभी नवरोजों में नहीं गई और ना ही तू खुद आसतों यानि बादशाही डेरों में गया। तू कभी शाही झरोखे के नीचे नहीं खड़ा रहा और तेरा रौब दुनियां पर गालिब रहा। इसलिए मैं कहता हूँ कि तू सब तरह से जीत गया और बादशाह हार गया। अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए अपना पूरा जीवन का बलिदान कर देने वाले ऐसे वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप और उनके स्वामिभक्त अश्व चेतक को शत-शत कोटि-कोटि प्रणाम। *पता - हुडको भिलाई (छ.ग.)*

"सहज नहीं होता"

"जीवन में दुर्गम पथ पर
चलना साथी,
सहज नहीं होता।
जीवन में अपनों से लड़ना,
गम सहना,
सहज नहीं होता।
दूर है मंजिल साथी,
जीवन में पाना,
सहज नहीं होता।
पतझड़ की चुभन में,
मधुमास का अहसास,
सहज नहीं होता।
जीवन सम्बन्धों को भूल,
अकेले चलना,
सहज नहीं होता।
भक्ति पथ पर चलना,
प्रभु दर्शन पाना,
सहज नहीं होता।
जीवन में दुर्गम पथ पर,
चलना साथी,
सहज नहीं होता।।"

- **सुनील कुमार गुप्ता**, हा. नं. ३/१३५५-सी, न्यू भगतसिंह
कालोनी, बाबोरिया मार्ग, सरहानपुर-२४७००१

३१ मई धूम्रपान निषेध दिवस पर

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

- ऋषि कुमार आर्य

पूरे विश्व के लोगों को तम्बाकू मुक्त और स्वस्थ बनाने के लिए तथा स्वास्थ्य खतरों से बचाने के लिए तम्बाकू चबाने या धूम्रपान के द्वारा होने वाले सभी परेशानियों और स्वास्थ्य जटिलताओं से लोगों को आसानी से जागरुक बनाने के लिए पूरे विश्व भर में एक मान्यता प्राप्त कार्यक्रम के रुप में मनाने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पहली विश्व तम्बाकू निषेध दिवस का आरम्भ किया गया।

रोग और इसकी समस्याओं से पूरी दुनियां को मुक्त बनाने के लिए डब्ल्यू एचओ द्वारा विभिन्न दूसरे स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं जैसे एड्स दिवस, मानसिक स्वास्थ्य दिवस, रक्त-दान दिवस, कैंसर दिवस आदि। बहुत ही महत्वपूर्ण ढंग से पूरी दुनियां में सभी कार्यक्रम आयोजित और मनाये जाते हैं। इसे पहली बार ७ अप्रैल १९८८ को डब्ल्यूएचओ की वर्षगांठ पर मनाया गया और बाद में हर वर्ष ३१ मई को तम्बाकू निषेध दिवस के रुप में मनाने की घोषणा की गयी। डब्ल्यूएचओ के सदस्य राज्यों के द्वारा वर्ष १९८७ में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के रुप में इसका सृजन किया गया था।

पूरे विश्व से किसी भी रुप में तम्बाकू का सेवन पूरी तरह से रोकने या कम करने के लिये लोगों को बढ़ावा देने और जागरुकता के विचार से इसे मनाया जात है। दूसरों पर इसकी जटिलताओं के साथ ही तम्बाकू इस्तेमाल के नुकसानदायक प्रभाव के संदेश को फैलाने के लिये वैश्विक तौर पर लोगों का ध्यान खींचना इस उत्सव का लक्ष्य है। इस अभियान में कई वैश्विक संगठन शामिल होती है, जैसे राज्य सरकार, सार्वजनिक स्वास्थ्य संगठन आदि विभिन्न प्रकार के स्थानीय लोक जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

निकोटीन की आदत स्वास्थ्य के लिये बहुत हानिकारक है जो कि जानलेवा होता है और मस्तिष्क अभावग्रस्त रोग के रुप में जाना जाता है जो कभी भी उपचारित नहीं हो सकता है हालांकि पूरी तरह से गिरफ्तार किया जा सकता है। दूसरे गैर-कानूनी ड्रग्स मेथ, शराब, हीरोइन आदि की तरह ये मस्तिष्क डोपमाइन पथ को रोक देता है। दूसरे उत्तरजीविता क्रियाएँ जैसे खाना और पीने वाले भोजन और द्रव्य की तरह शरीर के लिये निकोटीन की जरुरत के बारे में गलत संदेश भेजने के लिये ये दिमाग को तैयार करता है।

उनके जीवन को बचाने के लिये धरती पर पहले से इस्तेमाल करने वालों की मदद के लिये स्वास्थ्य संगठनों के द्वारा विभिन्न प्रकार के निकोटिन की लत छुड़ाने के तरीके उपलब्ध हैं। तम्बाकू मुक्त युवा के संदेश अभियान के द्वारा और २००८ का विश्व तम्बाकू निषेध दिवस को मनाने के दौरान इसके उत्पाद या तम्बाकू के प्रचार, विज्ञापन और प्रयोजन को डब्ल्यूएचओ ने प्रतिबंधित कर दिया है।

तम्बाकू के इस्तेमाल के द्वारा होने वाले सभी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति लोगों को जागरुक बनाने के लिए डब्ल्यूएचओ और इसके सदस्य राज्यों सहित गैर-सरकारी और सरकारी संगठनों द्वारा वार्षिक आधार पर विश्व तम्बाकू निषेध दिवस आयोजित किया जाता है। कुछ क्रिया कलाप इस दिन को मनाने के लिये किया जाता है वो हैं सार्वजनिक मार्च, प्रदर्शनी कार्यक्रम, बड़े बैनर लगाना, शिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से विज्ञापन अभियान, धूम्रपान रोकने और छोड़ने के लिये आम जनता से सीधा संवाद शामिल अभियानकर्ताओं के लिये सभा आयोजित करना, मार्च, लोगों के बीच बहस, तम्बाकू निषेध दिवस क्रिया कलाप, लोक कला स्वास्थ्य कैम्प, रैली और परेड

खास क्षेत्रों में तम्बाकू को प्रतिबंधित करने के लिये नये कानूनों को लागू करना और बहुत सारी गतिविधियाँ हो सकती है जो देश को तम्बाकू मुक्त बनाने में सहायक होगी। इसे सार्वजनिक या आपराधिक अवकाश के तौर पर घोषित नहीं किया गया। हालांकि इसे ढेर सारी प्रभावशाली मुहिमों के साथ मनाया जाता है।

ये बहुत जरुरी है कि वैश्विक स्तर पर तम्बाकू सेवन के प्रयोग पर बैन या इसे रोका जाये क्योंकि ये कई सारी बीमारियों का कारण बनता है जैसे दीर्घकालिक अवरोधक फेफड़ों संबंधी बीमारी (सीओपीडी), फेफड़े का कैंसर, हृदय घात, स्ट्रोक, स्थायी दिल की बीमारी, वातस्फीति, विभिन्न के कैंसर आदि। तम्बाकू का सेवन कई रुपों में किया जा सकता है जैसे सिगरेट, सिगार, बीड़ी, मलाईदार तम्बाकू के रंग की वस्तु (टूथ पेस्ट), क्रिटेक्स, पाईप्स, गुटका, तम्बाकू चबाना, सुर्ती (हाथ से मल के खाने वाला तम्बाकू) तम्बाकू के रंग की वस्तु, जल पाईप्स, स्नस आदि। इसलिये तम्बाकू उत्पादों के इस्तेमाल पर भी रोक लगाने के लिए ये बहुत जरुरी है।

बढ़ती मांग के अनुसार ७ अप्रैल १९८८ में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस कहे जाने वाले एक वार्षिक कार्यक्रम को मनाने के लिए १५ में १९८७ को डब्ल्यूएचओ द्वारा एक प्रस्ताव पास हुआ था, **तम्बाकू के इस्तेमाल पर रोक** जो बाद में ३१ मई १९८९ को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के रुप मनाने के लिये १७ मई १९८९ को आगे दूसरा प्रस्ताव के अनुसार बदला गया। तम्बाकू छोड़ो, स्वस्थ रहो।

पता - आर्य नगर, दुर्ग

लक्ष्य वैराग्य का उदय

- लोचन आर्य

मानव जीवन का लक्ष्य परमात्मा है, उस परमात्मा को पाने के लिए, अष्टांगयोग के सीढ़ी पर आरूढ़ होता है। वैराग्य के भाव को जगाने के लिए। यह जगत् सदा चलायमान है, जो सदा चल रहा है, रुकता नहीं, क्योंकि इसको गति देने वाला कोई चेतन पदार्थ जो जगत् के एक-एक अणु पर विद्यमान है। जिससे यह जगत् उस ईश के कारण गतिमान हो रहा है। मनुष्य जब पूर्ण निश्चय कर लेता है, कि वह ईश संसार के अणु-अणु में विद्यमान है, किसी भी भौतिक पदार्थ का उपभोग त्यागपूर्वक करता है ताकि कोई दूसरा भी इसका उपभोग कर सके क्योंकि परमात्मा को अणु-अणु में देखने से फल यह मिलता है कि-

१. भौतिक पदार्थों के प्रति मेरापन का भाव समापन होता है, क्योंकि वह ईश सारे जगत् में बसा है, तो यहाँ का हर वस्तु उस ईश का है।
२. आत्मा में छल-कपट, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, मोह से बचा रहता है। और आत्मा वैराग्य के पथ पर आगे बढ़ता है।
३. बुद्धि को सूक्ष्म रूप से उसकी तरफ से ज्ञान मिलता रहता है जिससे बुद्धि ज्ञान से आनन्द में गोता लगाती रहती है।
४. अणु-अणु में ईश को विद्यमान देखता है तो मन, बुद्धि, वश में होता है।

इस तरह प्रकृति का ज्ञान जब होता है तब वैराग्य के भाव उदय होता है, तब उस ईश के भक्ति को करता हुआ संसार में निर्लेप होकर विचरण करता है। उपनिषद का ऋषि इस मंत्र में-

ओम् ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्॥

संसार वासी को ज्ञान दे रहा है। संसार का कोई भी भौतिक पदार्थ को त्यागपूर्वक उपभोग करे ताकि कोई दूसरा व्यक्ति भी इसका उपभोग कर सके। संसार के प्रति वैराग्य होता हुआ उस ईश को प्राप्त करना है जिससे यह मान का शरीर मिला है।

पता : आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)

आधी दुनिया

बेटी का जीवन बचाएँ

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

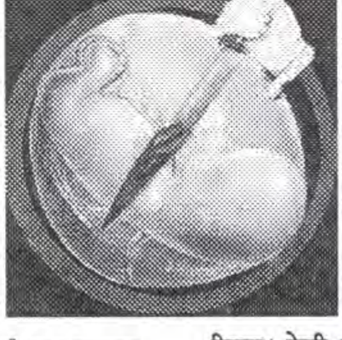

माननीय मोदी जी ने बेटी बचाओं का नारा दिया है इस अभियान से भारत में बेटियों पर हो रहे अत्याचार कम होंगे। आज इसके प्रति सजगता भी आई है। गर्भ में ही बेटी की हत्या कर दी जाती थी जो कि घिनौना कुकृत्य है। अपनी ही बेटी को गर्भ में मरवा देना एक महापाप है वैसा ही जैसा किसी बालक या बड़े शस्त्र से काट कर हत्या कर देना होता है जो कि अपराध है, वैसा ही जब सन्तान गर्भ में हो उसे मार देना उसकी हत्या ही तो है। ऐसा भारत में होने लगा था इससे बालिकाओं की शिशु दर भी कम हो गई अर्थात् बेटियों की संख्या बेटों की अपेक्षा कम हो गई यदि भ्रूण हत्या जैसा अपराध ऐसे ही चलता रहा तो बेटियां तो समाप्त ही हो जायेगी। होता यह है कि अनेक लोग ऐसा अमानवीय कृत्य करते हैं यदि गर्भ में बालिका है जिसका कि अल्ट्रासोनोग्राफी से पता चलता है उसे गर्भ में ही गर्भपात करा मार दिया जाता है। ऐसी मानसिकता उनकी होती है जो यह चाहते हैं कि उन्हें पुत्र ही होना चाहिए पुत्री नहीं यदि ऐसी सोच है तो गलत है क्योंकि यदि उस व्यक्ति के यहां पुत्र ही होते रहे बड़े भी हो जाये तो उनके लिये वधु कहां से आएगी। वह भी तो व्यक्ति होगा जिसके यहां गर्भ में पुत्री का पता चला होगा उसने गर्भपात नहीं कराया पुत्री हुई बड़े लाड़ प्यार से पाला होगा क्या उसका कुछ घट गया। यह मन का भ्रम है कि पुत्र से वंश चलता है पुत्री भी कम नहीं होती, आज बेटियां माता-पिता का नाम रोशन कर रही है।

पी.टी. उषा, प्रतिभा पाटिल, इन्दिरगांधी, किरण बेदी आदि महान हस्तियाँ ऊंचे पदों पर रही है, जिन्होंने देश का गौरव बढ़ाया है। मदालसा, गार्गी, मैत्रेयी, पाणिनी भी महिला थी, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई व दुर्गा भाभी को कौन नहीं जानता। आज भी बेटियां न्यायहितकारी, जिलाधिकारी, वैज्ञानिक आदि है, जिन्होने अपने माता-पिता का परिवार का नाम रोशन किया है। आज के वैज्ञानिक प्रगति के समय में बेटा-बेटी एक समान है और शिक्षित वर्ग में दोनों को ही समान महत्व दिया जाना चाहिए। भारत अब स्वतन्त्र है हमें समाज को उन्नति के पथ पर लाना चाहिए अनेक कुप्रथायें जो पहले थीं ऋषि दयानन्द ने उनका पुरजोर विरोध कर कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास किया। ऐसी अनेक कुप्रथायें थीं जो केवल महिलाों के लिए ही थीं, एक सती प्रथा, दूसरी जौहर, तीसरी बाल विवाह, चौथी बालिका के जन्म लेते ही उसको मार देना, पांचवी विधवा होने पर उनका जीवन यातनामय बना देना आदि आदि। आज गर्भ में अल्ट्रासाऊण्ड द्वारा बालिका पाए जाने पर भ्रूण हत्या करा दी जाती है। अतः यह सब बालिका होने पर ही होता है। ऐसा कर बेटी का जन्म एक अपराध बना दिया। अनेक महान लोगों ने कुप्रथाओं को रोकने हेतु इस क्षेत्र में बेटी का जीवन बचाने हेतु कार्य किये हैं।

दहेज प्रथा भी एक बहुत बड़ा अपराध है जिसे कि अनेक मूर्ख लोगों ने महत्व दे रखा है। बेटी वाले जब वर की तलाश करने चलता है तो अदिक तर वर पक्ष के लोग दुकानदारी करने लगते हैं, सीधे ही मांग करते हैं बहुत से लोग पहले न मांग कर वधु के घर में आने पर वधु को दहेज के लिए प्रताड़ित किया करते हैं। अतिरिक्त दहेज की मांग करते हैं न मिलने पर हत्या कर देते या ऐसी स्थिति पैदा कर देते है कि आत्म हत्या के लिए बाध्य हो जाते हैं। दहेज की मांग भी बेटी के लिए अभिशाप है। अनेक प्रकार से बेटियों की हत्या के मामलें न्यायालयों में चल रहे हैं। कहीं इन्हें गला दबाकर, कहीं जलाकर, कहीं भूखा रखकर प्रताड़ित कर आत्महत्या हेतु प्रेरित किया जाता है। ऐसे में बेटियां कहां सुरक्षित हैं ?

भारत में गर्भ से लेकर अन्त तक बेटी का जीवन नरक बन गया था, आर्यसमाज व अनेक संस्थों ने इस ोर ध्यान भी दिया, परन्तु आज भी बेटियों का जीवन भय के वातावरण में चल रहा। पिता के घर से पति के घर जाकर भी बेटी अधिकांशतः दुखी ही रहती है। इस ओर भी समाज में जागरुकता लानी आवश्यक है। आज बेटी का जीवन कष्ट में है, चाहे वह गर्भ में है, अथवा ससुराल में है। उसे अनेक प्रकार से कष्ट उठाने पड़ते हैं। बलात्कार, यौन अपराधों में वृद्धि हो रही है। दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों में बेटियों के साथ बलात्कार हो जाते हैं। ग्राम में अथवा अन्य स्थानों पर ऐसे अपराध हो जाते होंगे अनेक स्थानों पर तो पता भी नहीं चलता होगा।

बेटियों की रक्षा बेटियां ही कर सकती है क्योंकि महिलाओं में सास ही अधिकांशतः दहेज आदि हेतु वधु को प्रताड़ित करती है। सास भी तो किसी बेटी है, जब बेटी जन्म लेती है तो यही उसका विरोध अधिकतर करती हैं। यह बेटी जो सास बनीं हैं अतिरिक्त दहेज की मांग करती है। यही सास बेटा होते ही कहती है कि दहेज में कार लूंगी बेटा के विवाह में खूब दहेज मिलेगा। जब ऐसी भावना आरम्भ से हो जाती है तो विवाह में दूल्हे का मोल तोल होना स्वाभाविक है। आज दूल्हों की दुकानें लगी हुई है, सौदेबाजी होती है। कौन दूल्हा कितने में बिकेगा इस पर सब्जी मंडी की भांति बात चलती है। सोचें क्या ऐसे सम्बन्ध जो दहेज की बोली पर होंगे स्थायी होंगे। कदापि नहीं भले ही बेटी पराये घर जाकर कुछ न बोले लेन-देन के विषय पर तनातनी रहती है।

दहेज एक कुप्रथा है, दहेज लेना न देना दोनों ही आपराधिक श्रेणी में आने चाहिए, विवाह शादी में दिखावा व्यर्थ के धन की बर्बादी, कोई विवाह संस्कार का विषय नहीं है। बारात की संख्या भीड़ बढ़ाना भी कोई अच्छा काम नहीं। इस प्रकार की अथाह भीड़ व दिखावे पर रोक लगानी चाहिए विवाह वैदिक विधि से हो प्रदर्शन से रहित हो। विवाह में धन का, जन बल का प्रदर्शन दहेज और नाच कूद, मद्यपान आदि व्यर्थ के कार्यो पर रोक लगाकर इसे सामान्य करना चाहिए। सर्वत्र एक समान विधि व नीति निर्धारित करनी चाहिए।

बाराती अधिक न हो, उनकी संख्या निश्चित होनी चाहिए। कोई मद्यपान न करे, गौड़े नाच कूद न हो, बैण्ड बाजे, डी.जे. साऊंड पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। बाजार आदि में बारातों का जुलूस निकालने पर भी रोक लगे। दहेज में सीमा निर्धारण होना चाहिए। दूल्हों की बोली पर भी प्रतिबन्ध होना चाहिए। दूल्हों की दुकानदारी या सौदेबाजी अभिशाप है सम्बन्ध नहीं। वैदिक विधि का ध्यान रखना चाहिए यह सब बेटियों के हित में ही है।

बेटियों, वधुओं की हत्या न हो, भ्रूण हत्या न हो, इसके लिए वेदज्ञान का प्रकाश आवश्यक है। आर्यसमाज इसके लिए सदैव प्रयत्नशील है। आर्यसमाज ने इसीलिए गुरुकुल शिक्षा पर बल दिया है। वैदिक संस्कारों को करने के लिए प्रयास किए हैं। वेदों की ओर चलेंगे तो यह कालिमायुक्त कुरीतियों के बादल स्वयं ही हटने लगेंगे।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, गली नं. १, खुर्जा-२०३१३१

"पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश"

अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे।
न तुम बचोगे न साथी तुम्हारे ॥
रामायण, महाभारत पढ़ो देखो ग्रन्थ हजार।
बिन सत्यार्थ प्रकाश के जीवन है बेकार ॥
कोटि-कोटि जनता की आश।
पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश ॥
सत्य धर्म की यदि हो आश।
पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश ॥
कुरान, पुराण, बाईबिल और अन्ध विश्वास।
इन सबको सुधारता है, सत्यार्थ प्रकाश ॥
सौ मर्जों का एक इलाज,
पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश ॥

- तपोभूमि से संकलित

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से गठिया व जोड़ों के दर्द का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

हमारा भारतवर्ष एक विशाल देश है, जन सामान्य की अज्ञानता, आहार-विहार के नियमों के उदासीनता स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही आदि के कारण रोगियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। होमियोपैथी विश्व की सरलतम चिकित्सा पद्धति मानी जाती है, इसी पद्धति के द्वारा जटिल से जटिल रोगों की चिकित्सा बड़ी आसानी से की जा सकती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने जिन रोगियों को असाध्य कहकर छोड़ दिया, उन्हें होमियोपैथी द्वारा न केवल शीघ्र आराम हुआ बल्कि वे पूर्णतः रोगमुक्त भी हो गये।

जोड़ों के दर्द में अत्याधिक पीड़ादायक परेशानी भरा जीवन जीना पड़ता है, जिसके लक्षण सभी जानते हैं कि शरीर में दोनों हड्डियों के जोड़ भाग या जहां आपस में हड्डियों का मिलन होता है, उस भाग में दर्द या दर्द के साथ सूजन होती है। हाथ-पांव के बड़े जोड़ों को गाऊट, अर्थराइटिस कहते हैं। हाथों की अंगुलियों में दर्द या सूजन हो तो या रियुमेटीज्म के नाम से जाना जाता है।

संधिशोथ : प्रारंभिक अवस्था में लगभग पूरा शरीर प्रभावित हो जाता है। किसी किसी को एक या दो जोड़ प्रभावित हो जाता है, यह शरीर के किसी भी जोड़ या जोड़ी या संधि में हो सकताहै। गठिया दो प्रकार का होता है- आस्टियो आर्थराइटिस और र्ह्युमेतिक अर्थराइटिस (**osteo arthritis**) यह एक जीर्ण रोग है, जो ५० वर्ष के लोगों में पाया जाता है, मोटापा, बुढ़ापा और जोड़ों का क्षरण, जिसमें वजन बढ़ने के साथ आराम की अधिकता पाई जाती है।

अस्थी संधिशोथ : यथा नाम तथा गुण -

इसमें जोड़ों के अंदर कई जगह बदलाव आ जाते हैं, जोड़ों में दर्द और कठोरपन इस रोग के प्रमुख लक्षण होते हैं। व्यायाम से प्रायः दर्द बढ़ने लगता है।

कारणों के प्रकार - खानदानी, चोट लगने से, अधिक औषधियों के सेवन से, यूरिक एसिड की टोफी बनने के कारण। यूरिक एसिड के नहीं निकल पाने से।

आमवात (Rheumatism):- जो भोजन हम करते हैं कमजोर चयापचय के कारण पाचन नहीं होने से भोजन का कच्चे रुप आम बनता या वात (**Aeolian**), वायु के प्रभाव से दोनों का संगम आमवात का निर्माण होता है।

होमियोपैथिक उपचार :- कई रोगी होमियोपैथिक चिकित्सा कराकर ठीक हो गये हैं एवं कई रोगियों का इलाज चल रहा है।

होमियोपैथिक औषधियाँ :- ब्रायोनिया, रस्टाक्स, बेलोडोना, एपिसमेल, रूटा, अर्निका, मेडोरिहनम आदि औषधियांचिकित्सक की सलाह से ली जा सकती है।

परहेज :- मसालेदार एवं गरिष्ठ चीजें, नशीली चीजें, वसायुक्त भोजन, मांसाहार, ठंडी चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

यज्ञ का प्रभाव

यज्ञ से मानव के भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं व्यक्तिगत उद्देश्य पूर्ण होते हैं। यज्ञ किसी-न-किसी इच्छा की पूर्ति के लिए किया जाता है। महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया तो चार पुत्रों की प्राप्ति हुई। अतः समस्त इच्छाओं को पूरा करने वाला है। अग्नि अमूल्य है जीवन का संबंध आरोग्यता से है और आरोग्यता का संबंध यज्ञ से है। अनगिनत ज्ञात सूक्ष्म जीवाणु हमारे चारों तरफ वातावरण में और हमारे रोमकूपों, रक्त और जोड़ों में रहते हैं। हवन द्वारा इन सभी का नाश होता है। जिस घर में प्रतिदिन हवन होता है, वह घर बीमारियों से बचा रहता है।

समाचार प्रवाह

नामकरण संस्कार सम्पन्न

सापलहर। दिनांक १-४-२०१८ को आर्यसमाज सापलहर के मंत्री श्री टिकनू आर्य के सुपुत्र श्री सुधांशु शेखर व पुत्रवधु श्रीमती मंजूश्री की कन्या का नामकरण संस्कार डॉ. सुदर्शन देव जी आचार्य गुरुकुल हरिपुर के ब्रह्मत्व में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ एवं माता-पिता व समस्त गुरुजनों की सहमति से अन्वेषा नाम रखा गया। इस अवसर पर मंडल आर्यसमाज पद्मपुर की प्रधाना श्रीमती शैलवाला देवता, श्री आरुणी कुमार शास्त्री, श्री तरुण कुमार शास्त्री, श्री खुशीराम पाण्डेय, श्री चित्रसेन नायक, श्री पूरनलाल प्रधान व श्री कृतिवास साहू आदि विद्वान व शुभचिंतक पधारे हुए थे। ईश्वर की अपार दया से शांति पाठ व ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। - *आ. प्रेमप्रकाश शास्त्री*

आर्यसमाज (काकड़वाड़ी) मुम्बई में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आचार्य वृहस्पति शास्त्री का "आर्य वैदिक विद्वान् सम्मान" से सम्मानित

काकड़वाड़ी (मुम्बई)। दिनांक १८-३-२०१८ को आर्यसमाज (काकड़वाड़ी) मुम्बई द्वारा आयोजित १४४वां आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह मुम्बई नगर तथा उपनगरों के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों की महानीय उपस्थिति में सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य वृहस्पति शास्त्री गुरुकुल नवप्रभात आश्रम वैदिक विद्यापीठ (उड़ीसा) को आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा **"आर्य वैदिक विद्वान् सम्मान"** से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप अभिनन्दन पत्रम्, उपढौकन, माल्य, श्रीफल एवं पच्चीस हजार रुपयों का चेक प्रदान कर किया गया। ***संवाददाता : निखिलेश आर्य***

आर्यसमाज कटनी का द्विवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

कटनी। विगत दिनों आर्यसमाज कटनी (म.प्र.) का द्विवार्षिक निर्वाचन वर्ष २०१७-१९ के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए, जिसमें पदाधिकारी के रुप में -

संरक्षक	-	श्री विश्वदीप पाण्डेय,
सह संरक्षक	-	श्री बृजमोहन मनोचा,
प्रधान	-	श्री अश्विनी जी सहगल,
उपप्रधान	-	श्री योगेश जी मिश्र,
मंत्री	-	विद्यावाचस्पति श्री नरेन्द्र जी विश्वकर्मा,
उपमंत्री	-	डॉ. धनीराम जी वर्मा,
कोषाध्यक्ष	-	श्री संदीप जी मनोचा,
पुस्तकाध्यक्ष	-	डॉ. कालीचरण जी कछवाह।

समस्त पदाधिकारियों को छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाईयाँ व शुभकामनाएँ।

अध्यापकों की आवश्यकता

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरयाणा) में संस्कृत-साहित्य, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि के विषयों के अध्यापन हेतु **अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवनिवृत्त अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें। आवास, भोजन, गोदुग्ध की निःशुल्क व्यवस्था के साथ-साथ समुचित मानदेय भी दिया जायेगा। इच्छुक महानुभाव गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर दिनांक २६, २७ २८ मई २०१८ को पधारें।**

: सम्पर्क सूत्र :

८७६४२१८८८१, ९४१४५८९५१०, ८००५९४०९४३

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत का २८वाँ वार्षिकोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से ऋषि-मुनि, माता-पिता, गुरुजनों के आशीर्वाद से तथा भावदृश की शुभेच्छा के फलस्वरुप अविद्या के नाश तथा विद्या की वृद्धि कर समस्त संसार के कल्याण की भावना से पूर्वजों की तपोभूमि पर गुरुकुल का निर्माण किया गया है। इसमें विगत सत्ताईस वर्षों से वेद, उपनिषद, दर्शन, संस्कृत भाषा तथा व्याकरण शास्त्रादि का शिक्षण कार्य प्रवर्तित हो रहा है।

यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि आप के इस **प्रिय गुरुकुल का वार्षिकोत्सव वि.सं. २०७५ ज्येष्ठ शुक्ल १२,१३,१४ तदनुसार दिनांक २६, २७ व २८ मई २०१८ (शनिवार, रविवार, सोमवार) को मनाया जा रहा है। त्रि-दिवसीय वार्षिकोत्सव में यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा ब्रह्मचारियों द्वारा शास्त्रार्थ, व्याख्यान, व्यामादि के प्रदर्शन-इत्यादि अनेक कार्यक्रम आयोजित है**। वार्षिकोत्सव के इस कार्यक्रम में अनेक संत-महात्मा तथा विद्वज्जन पधारेगे। आप अपने परिवार तथा इष्ट मित्रों के साथ गुरुकुल में सादर आमंत्रित है। आमंत्रण को स्वीकार कर अवश्य पधारें तथा यज्ञ, वेदोपदेश, प्रवचन तथा संत-महात्माओं के श्रवण दर्शन का लाभ लेने के साथ-साथ ब्रह्मचारियों के तप तथा विद्याभ्यास की प्रगति का भी साक्षात्कार करें।

कृपया अपने आने की सूचना अधोलिखित किसी एक चलभाष पर अवश्य देवें।

मोबा. नं. ९४१४५८९५१०, ८००५९४०९४३, ८७६४३१८८८१

आचार्य चैतन्यजी को साहित्य सम्मान

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम)। भुट्टि वीवर्ज कोआप्रेटिव सोसाईटी संस्था के संस्थापक स्व. श्री वेदराम ठाकुर जी की स्मृति में संस्था शालोद्योग, सहकारिता और साहित्य एवं समाजसेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले महानुभावों को पुरस्कृत एवं सम्मानित करती है। इस बार समिति द्वारा **"ठाकुर मौलूराम जीवन्त पहाड़ी भाषा एवं संस्कृति राष्ट्रीय सम्मान"** के लिए वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता आचार्य भगवानदेव चैतन्य जी को चुना गया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य की अब तक लगभग सत्तर साहित्यिक एवं आध्यात्मिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है तथा अब तक साहित्य अकादमी सहित बीसियों पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। आचार्य जी ने एक प्रभावशाली एवं लोकप्रिय वैदिक प्रवक्ता के रुप में भी यश प्राप्त किया है। उन्हें यह सम्मान एक अन्तराष्ट्रीय भव्य समारोह में प्रदान किया जायेगा। छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा अग्निदूत परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

संवाददाता : भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

दिल्ली। दुनियां के सबसे प्रदूषित शहर दिल्ली की वायु पर्यावरण शुद्धि एवं भारतीय नववर्ष के उपलक्ष्य में ५ हजार वर्षों के इतिहास में पहली बार जीव रक्षणि प्रीत फाऊडेंसन एवं पतंजलि युवा भारत दिल्ली के तत्वावधान में रोहिणी दिल्ली में ११०० कुण्डील विराट यज्ञ का आयोजन धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को पीतवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस समारोह के मुख्य वक्ता दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री डॉ. योगानन्द शास्त्री जी थे। आचार्या सूर्या देवी जी के ब्रह्मत्व एवं आर्य तपस्वी सुखदेव जी एवं अनेक गणमान्य विद्वानों, समाजसेवियों के पावन सान्निध्य में यह ऐतिहासिक समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। समारोह को सफल बनाने हेतु श्री प्रीतिसिंह वैदिक, दीपा आर्या, प्रदीप माथुर, संदीप भारद्वाज, पं. कालूराम जी एवं पतंजलि युवा भारत दिल्ली के सदस्यों ने सराहनीय योगदान दिया।

संवाददाता : डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, साहित्य सम्पादक

ओ३म्
Your child's future with Indian culture...
Maharishi Dayanand Saraswati Ji
SHIVALIK
GURUKUL
C.B.S.E. Pattern Only for Boys
Swami Shraddha Nand ji
(क) शिक्षा (आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ-साथ वैदिक धर्म के आलोक में नैतिक शिक्षा द्वारा जीवन-निर्माण)।
(ख) सुरक्षा (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक)।
(ग) संस्कार (शरीर व आत्मा को श्रेष्ठ गुण, कर्म एवं स्वभाव से सुशोभित करना)।
(घ) सेवा (गुरुकुल में प्राप्त उत्तम गुणों के माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की उन्नति के लिए अपना सात्विक योगदान सेवा के रूप में करना)।
"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन होगा।
Features
• Digital Smart Classes
• Lush Green Playground • Eco Friendly Environment
• Experienced & Dedicated Staff
• Special Focus on Moral Values • Special Focus on Interaction in English
• Horse Riding & Gun Shooting • Digital & Well equipped Library
• Hi-Tech Computer Labs • Music Room
Co-curricular Activities
• Debate • Quiz • Art & Craft
• Painting • Educational Trips
• Meditation, Yoga & Hawan
• Inter House Competitions • Creative Writing
• Festival Celebrations • Music & Dance
• Language Lab Activities • Collage Making
• Book Reading Sessions • MUN Clubs
Date of Entrance Test : 26th March, 2018 Venue : Shivalik Gurukul
Timing : 10.00 a.m. to 11.30 a.m. Declaration of Result : 2.00 p.m. on same day
Admit card will be issued at Shivalik Gurukul Between 9.00 a.m. to 9.30 a.m.
Vill Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana), E-mail: shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 8901054781, 9671228002, 8813061212, Website : www.shivalikgurukul.com
Warden Contact No's: 9053720871, 9053720873, 9053720875, 9053720876

वार्षिक वृत्तांत, दशांश एवं अग्निदूत पत्रिका का शुल्क भेजने बाबत्

-: आवश्यक सूचना :-

श्रीमान् प्रधान/मंत्री,

समस्त संबद्ध आर्यसमाज, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

श्रीमन्नमस्ते,

अवगत हो कि प्रत्येक वित्तीय वर्ष समाप्ति के पश्चात् अप्रैल माह में उपरोक्त विषयांकित वार्षिक वृत्तांत, दशांश एवं सभा मुख पत्र अग्निदूत का शुल्क सभा को नियमावली अनुसार प्रस्तुत कर देना चाहिए, परन्तु कुछ आर्यसमाजों को छोड़कर अधिकांश आर्यसमाजें उपरोक्त वांछित वार्षिक वृत्तांत एवं दशांश सभा कार्यालय को आज तक नहीं भेजे हैं।

पुनश्च विदित हो कि आर्यसमाज के नियम-उपनियम अनुसार आर्यसमाजों का प्रतिवर्ष निर्वाचन किया जाकर उसका उल्लेख वार्षिक वृत्तांत में दर्ज कर सभा को भेजा जाना चाहिए, परन्तु कुछ आर्यसमाजों को छोड़कर अधिकांश आर्यसमाजों द्वारा उपरोक्त वांछित वार्षिक वृत्तांत सभा कार्यालय को आज तक नहीं भेजा गया है।

विदित हो कि इस वर्ष 2018 में सभा का त्रैवार्षिक वृहद अधिवेशन एवं निर्वाचन सम्पन्न होने जा रहा है। अतः लंबित वांछित वार्षिक वृत्तांत, दशांश एवं अग्निदूत का वार्षिक शुल्क 100 रुपया सभा कार्यालय को इस पत्र प्राप्ति के तत्काल बाद सभा कार्यालय को अनिवार्य रुप से भेजने का कष्ट करें।

मंत्री

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

॥ ओ३म् ॥

॥ विद्यायाऽमृतमश्नुते ॥ (वेद) विद्या से अमृत्व की प्राप्ति होती है ।

विद्या ददाति विनयम्

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय

जी.ई. रोड, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

छ.ग. शासन–शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त (पंजी. क्र. 182057)

संचालित : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रवेश प्रारम्भ

शिक्षा सत्र : 2018–19

हिन्दी माध्यम

कक्षा पहली से दसवीं

कक्षा ग्यारहवीं–बारहवीं

(गणित, जीव–विज्ञान, कामर्स, कला)

हमारा संकल्प

शिक्षा के साथ
वैदिक संस्कार
दैनिक संध्या, हवन,
बौद्धिक विकास के साथ
नैतिक विकास

ENGLISH MEDIUM

Nursery,
PP-I, PP-II
STDI to IX

सम्पर्क : कार्यालय : 0771–2572013, प्राचार्य : 9179509030, सचिव : 9826363578

CHH-HIN/2006/17407 **मई 2018** डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

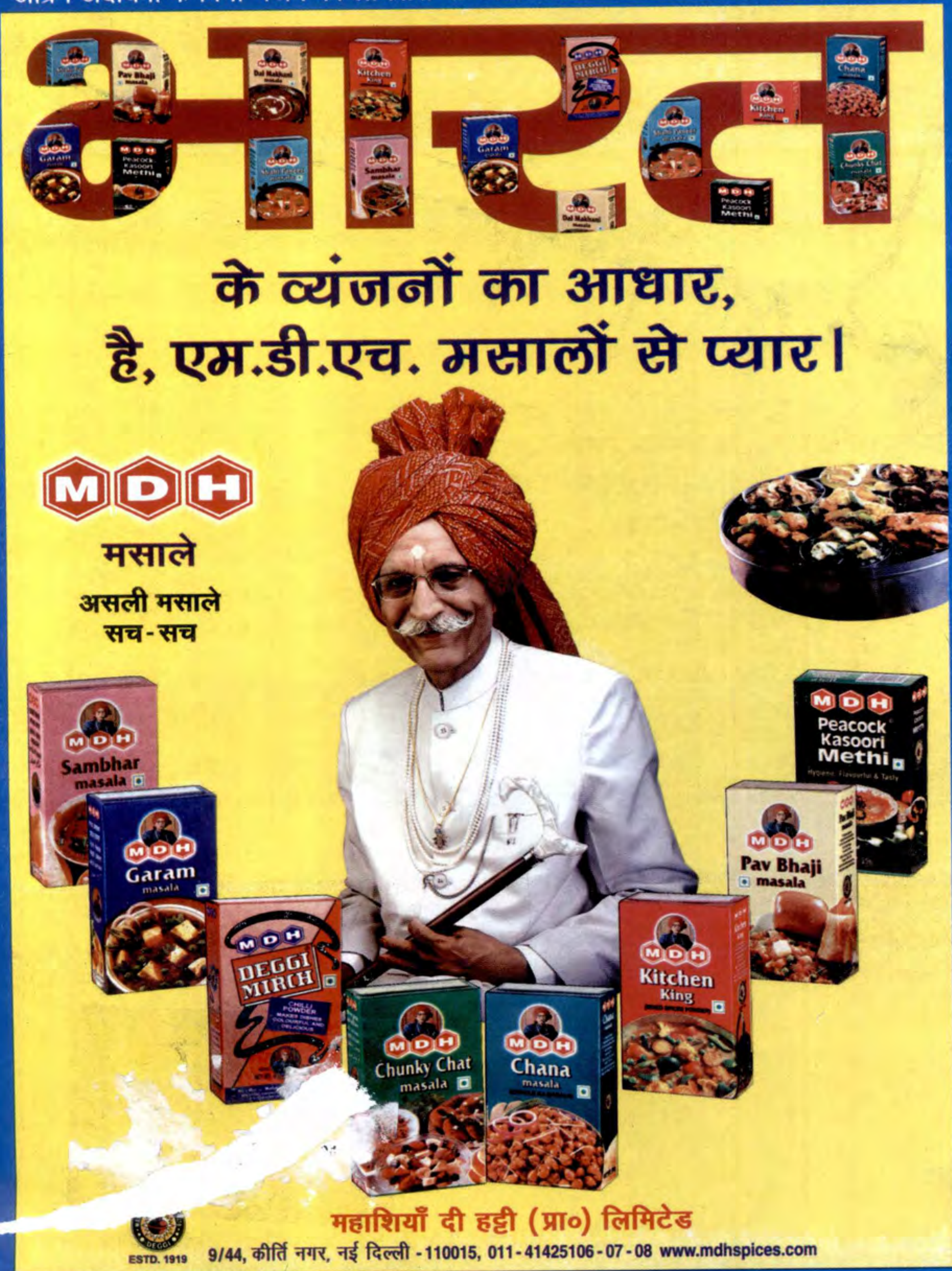

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001